Rs. 5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

Oct.' 2008



પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧. • Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1.









१. श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर, लोज की बावली में श्री नीलकंठवर्णी का दर्शन
२. अहमदाबाद मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का फूलों से अलंकृत दर्शन
३. श्री स्वामिनारायण मादिर लेस्टर में दर्शन देते हुए श्री राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज
४. अहमदाबाद के टाउन होल में सुप्रसिद्ध कथाकार पू. पी.पी. स्वामी के वक्तापद पर कथाश्रवण करते हुए संत-हरिभक्त तथा टाउन होल में व्यासपीट की आरती उतारते हुए कथा के यजमानश्री घनश्यामसिंह वाघेला परिवार



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी म्ठहाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरूपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
Www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 18 अक्टुम्बर -2008

अनुक्रमणिका

१	अस्मदीयम	२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३	आनन्द की लहर : एक रुपया का कमाल	४
४	नूतन वर्ष में.....	५
५	पहला घूंट मीठा	९
६	प्रसादी के दतुअन का पीलु वृक्ष (वरखड़ी)	१०
७	श्रीजी म्ठहाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद मंदिर	११
८	सत्संग सुरभि	१३
९	सत्संग बालवाटिका	१५
१०	भक्ति सुधा	१७
११	प्रश्न पेटी	१९
१२	सत्संग समाचार	२०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१
से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्



अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव गादी के आदि आचार्य प.पू.ध.धु. १००८ अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के प्रादुर्भाव को इस वर्ष २०० वर्ष पूर्ण हो रहा है। सर्वावतारी श्रीहरि के बडे भाई रामप्रतापजी महाराज तथा सुवासिनी भाभी के सभी गुण परंपरा के अनुसार श्रीहरि के दत्तक पुत्र के रूप में प्राप्त होने वाले प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री की जन्म जयन्ती (द्विशताब्दि) "धर्मकुल वन्दना" महा महोत्सव संवत २०६५ ज्येष्ठ शुक्ल-११ मंगलवार को मनाया जायेगा। सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के ऐश्वर्यतत्वो का वारिस भावि पीढी को देने के लिये सर्व प्रथम सौभाग्य प्राप्त करने वाले प.पू. आदि आचार्य महाराजश्री में भगवान जैसे सद्‌गुण स्वभावतः थे। सदा समाधिस्थिति में रहकर भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करते रहे। भगवान का उत्तराधिकारी तो भगवान जैसे होना चाहिये। इसलिये भगवद् गुण संपन्न आचार्य महाराजश्री के सद्‌गुणो का शास्त्र होना चाहिये। श्रीहरि के अन्तर्ध्यान के बाद संप्रदाय के बड़े-बड़े संत-हरिभक्तों को भगवान के पद पर विराजमान होकर भगवान जैसा ही सुख दिया था। तीनों अवस्था में भगवान की मूर्ति को हृदयंगम करके रखते थे। निरावरण दृष्टि तो जन्म से ही थी। आत्मनिष्ठा पराकाष्ठा को प्राप्त थी। ४२ वर्ष के दीर्घकाल तक आचार्य पद पर रहकर अनंतकार्य किये। जिसमें अहमदाबाद मंदिर की भव्य हवेली तथा सभामंडप बनाये। मंदिर में अर्थागम मर्यादित होने पर भी अपनी सिद्धियों से बड़े-बड़े राजाओं को दुर्लभ ऐसी काष्ठ कलाकृति का भारत देश में एकमात्र बेनमून, अद्वितीय तथा संप्रदाय में गौरव के समान तथा जिसकी कीमत भविष्य में और भी अधिक होगी ऐसी हवेली का निर्माण किये। श्रीहरि की आज्ञा के अनुसार संस्कृत महाविद्यालय (पाठशाला) की स्थापना की। जिसमें संप्रदाय के असंख्य विद्वान तैयार हुए। जो पाठशाला वर्तमान में जेतलपुर अक्षर महोलवाडी में चलरही है। इसके अलावा डुंगरपुर, सिद्धपुर, छपैया (जन्मभूमि), मांडवी इत्यादि स्थानों पर मंदिर बनवाये। बामरोली (मध्यप्रदेश) गाँव में सत्संग कराकर गाँव के शरीर त्यागने वाले (मृत्युकालमें) सत्संगी को अंतकाल मं स्वयं लेने आयेंगे यह वचन दिये। जो आज भी दर्शन देकर स्वधाम ले जाते हैं।

आगामी नूतन वर्ष में भगवान का उत्तराधिकारी देने वाले प.पू. आचार्य महाराजश्री का जन्म द्विशताब्दी महोत्सव "धर्मकुल वन्दना" महोत्सव में तन, मन, धन से सेवा करके गुरुश्रद्धा से मुक्त बने।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी वाचको को तथा छोटे-बड़े सभी सत्संगियों को हमारा नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *साधु नारायणस्वरूपदास का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा
सितम्बर -२००८

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया भजन संध्या प्रसंग परपदार्पण।
२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण प्रसंग परपदार्पण।
२२. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण प्रसंग परपदार्पण।
२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा सत्संग सभा प्रसंग परपदार्पण।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दीपावली का शुभकार्यक्रम

धनतेरस : (आश्विन वद-१३) ता. २६-१०-२००८ रविवार को श्री लक्ष्मीपूजन, धन्वन्तरी जयंती, ठाकुरजी का अलंकार धोना।

काली चौदस : (आश्विन वद-१४) ता. २७-१०-२००८ सोमवार।

चतुर्दशी को श्री हनुमानजी का पूजन, आरती, सायंकाल ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ करकमलों से सम्पन्न होगा।

दीपावली : (आश्विन वद-३०) ता. २८-१०-२००८ मंगलवार समूह शारदापूजन, लक्ष्मीपूजन, सायंकाल ५-३० बजे अहमदाबाद मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ करकमलों द्वारा विद्वान पंडितो द्वारा संपन्न होगा।

नूतन वर्षाभिनंदन/अन्नकूटोत्सवः (कार्तिक शुक्ल-१) ता. २९-१०-२००८ बुधवार, श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प्रात : ५-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री उतारेंगे। इसके बाद अपने गद्दी स्थान पर प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ दर्शन देंगे।

गोवर्धन पूजन प्रातः ९-०० बजे अन्नकूट आरती दोपहर १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पन्न होगी। अन्नकूट दर्शन १२-०० से ४-३० तक होगा।

अहमदाबाद मंदिर में परम्परागत समूह शारदापूजन

श्रीजी महाराज के सभी प्रिय भक्तों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि सर्वावतारी श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से विद्वान पंडितो द्वारा अहमदाबाद मंदिर में प्रसादी के सभा मंडप में आश्विन कृष्ण-३० दीपोत्सव अमावास्या को ता. २९-१०-२००८ बुधवार के दिन सायंकाल ५-५० बजे समूह शारदा पूजन-लेखिनी पूजन वेद विधिसे शास्त्रोक्त विधिसे धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा। शारदा पूजन में लाभ लेने की इच्छावाले धर्म प्रेमी व्यापारी लोग अपना लेखा-जोखा पत्रक संख्या-२ नाम, पता, फोन का स्टीकर लगाकर लाल कपडे में बांधकर कोठार में जमाकर रसीद लेलें।

लेखा पत्रक स्वीकार करने की अंतिम ता. २६-१०-२००८ है। इसके बाद का पत्रक स्वीकार नहीं किया जायेगा। इसका सभी ख्याल रखें।

-कोठारी स्वामी

आनन्द की लहर

एक स्मया का कमाल

- शा. हरिजीवनदास (हिंमतनगर महंत)

जगदम्बा लक्ष्मीजी कभी-कभी पृथ्वी पर आती हैं। पृथ्वी पर क्या हो रहा हैं ? कौन क्या कर रहा है ? क्या खा रहा है ? क्या पी रहा है, कौन भक्ति कर रहा है इन सभी का ध्यान रखती हैं।

एकवार लक्ष्मीजी एकाएक पृथ्वी पर आगयी। किसी जंगल में एक लकड्हारा लकड़ी काट रहा था। पसीने से लथपथ था। परेशान था, उसके चेहरे से लाचारी झलकरही थी।

लक्ष्मीजी को दया आयी। उनके पास एक मणी थी तुरंत निकाल कर उस लकड्हारे को दे दी। यह मणी अपने पास रख, तुझे अब मजदूरी नहीं करनी पड़ेंगी। वह कठियारा उस मणी को धोती में बांधकर, मस्तक पर लकड़ी का गठ्ठर रखकर पत्नी के साथ निकल गया। आगे जाकर पानी में दोनो स्नान करके थकान दूर किये। वहां से घर के लिये निकले। लेकिन स्नान करके कपड़े पहनते समय मणी वहीं कही गिर गयी। जब वह घर गया तब ख्याल आया। वह जैसे का तैसा हो गया।

पुनः लकड़ी काटना प्रारंभ कर दिया। लकड़ी काटता शहर में लेजाकर बेंचता। लेकिन लक्ष्मीजी उसे सुखी करना चाहती थी। लक्ष्मीजीने उसे सोना का कीमती हार दे दिया। हार प्राप्त कर सुखी हो गया। इस वार भी नदी में स्नान करने गया, उस समय हार को किनारे रखकर गया, चमकता हार देखकर खाने की वस्तु समझकर कोई चील्ह पक्षी उसे उठा ले गया। कठियारा पुनः वैसे का वैसा।

इधर लक्ष्मीजी उसे सुखी करने की दृष्टि से दो बार वस्तु देने पर भी नहीं रही तो अक्षय पात्र दी।

अक्षय पात्र से जो मांगो सब मिलता है। अक्षयपात्र को देखकर खूब प्रसन्न हुआ। उसे अच्छा खाने के लिये मांगने नही आता था। वह प्रतिदिन रोटी तथा मरचा ही मांगता था। मिठाई देखा हो तो मांगे। रोटी-मरचा मिल गया वही बहुत है। अक्षयपात्र को धोकर आग पर सूखने के लिये रखा। किसी व्यापारी का एक स्मये की उधारी बाकी थी। इसलिये व्यापारी एक स्मये की जगह अक्षयपात्र उठा ले गया। पुनः उसके दुःख के दिन आगये।

अब लक्ष्मीजी भी ऊब गयी थी। भगवान नारायण को सिकायत की कि लकड़हारे को दे-देकर थक गयी वह सुखी ही नहीं हो रहा है। अब क्या करुँ? उस पर दया कीजिये। चलो हम साथ आते हैं। इसबार लक्ष्मी-नारायण दोनो साथ आये। भगवान बड़ी शांति से उसे एक स्मया दिये स्मया लेकर घर आया। उसे याद आया कि एक स्मया उस व्यापारी का बाकी है, उसे दे आता हूं। स्मया मिलते ही व्यापारीने अक्षयपात्र वापस दे दिया। पुनः भोजनादिक मिलने लगा। मजूरी बंद हो गयी।

एक दिन पत्नी को याद दिलाया कि बहुत दिन हो गये लकड़ी काटना भूल जायेगा। चलो जंगल में चलते हैं। जंगल में जाकर लकड़ीकाटेंगे। जिस वृक्ष पर चढकर लकड़ी काट रहा था। उस पर चील्ह का घोसला था, लेकिन उस घोसले में से जच्चा-बच्चा दोनो उड़ गये थे। देखा तो वही हार पड़ा था। अहो ! यह तो वही लक्ष्मीजी का दिया हार है। दोनो के आनंद की सीमा न रही। लकड़ी काटने के बाद दोनो पहले की तरह नदी में नहाने गये, भाग्यवश जो मणी पहले खो गई थी वह भी वहीं मिल गयी। अब तो दोनो के आनन्द की लहर उठने लगी। दोनो खोया हुआ तथा माता लक्ष्मी द्वारा प्राप्त हार एवं मणी घर लेकर आये और बाकी जीवन सुखमय बिताने लगे।

सज्जनो ! आपको ख्याल आ गया होगा कि लक्ष्मीजी लकड़हारे को क्यों सुखी नहीं कर पाई ? इस का रहस्य यह है कि मनुष्य केवल पैसे से या संपत्ति से सुखी नहीं होता। लेकिन सद्बुद्दि तथा सद्गुणो से सुखी होता है। भगवान एक स्मया के साथ सद्बुद्धि-सद्गुण भी दे दिये। वह जिससे सुखी हो गया। सद्गुण-सद्बुद्धि के बिना बड़े-बड़े धनवान् भी दुःखी हुए हैं। कारण यह कि हीरा-मोती का साग तथा सोने की रोटी नहीं होती। समृद्धि के साथ परिवार में परस्पर सद्भाव, स्नेह तथा सद्गुण होना परं आवश्यक है। सब कुछ पैसे से ही नहीं होता। कितना तो स्वभाव तथा सद्भावसे होता है। याद रखना, नूतन वर्ष का नया उपदेश; जो मात्र लक्ष्मीजी की कृपा के लिये दौडादौडी नहीं करना, थोडा भगवान नारायण से सद्बुद्धि अवश्य मांगना। सद्बुद्दि होगी तो ही लक्ष्मीजी सुखी करेंगी, अन्यथा रुलादेंगी।

"आनंद हेली" (आनंदकी लहर) के वाचक मित्रों को नूतन वर्ष का जयश्री स्वामिनारायण।



नूतन वर्ष में.....



- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

जीव अनादि काल से दीपोत्सव का पर्व मनाता आ रहा है। परंतु विक्रम संवत् के अनुसार गिन्ती करें तो आज तक २०६५ दीपावली मनाचूके हैं। भारतीय शास्त्र के अनुसार अलग-अलग संवत चलते हैं। इस तरह देखें तो हजारों दीपावली का उत्सव मनाते आ रहे हैं।

भारत देश की पांच अलग-अलग संस्कृति के विचार वालों के आनेवाले उत्सव को ही दीपावली कहते हैं। जिसमें धनतेरस, कालीचौदस, दीपावली, नूतन वर्ष तथा भातृ द्वितीया, इस तरह एक साथ पांच उत्सव समाये हुए है। मनुष्य तो बहुत सारे उत्सव मनाता है, परंतु इन उत्सवों को जागृति के साथ मनाये तो समग्र मानव जाति के जीवन का सुस्पष्ट दर्शन इन उत्सवों में मिलेगा।

जगत में मनुष्यमात्र को दीपावली का उत्सव मनाकर जीवन में दिव्य प्रकाश फैले ऐसी इच्छा बनी रहती है। इसलिए तो रंक हो या राजा, ज्ञानी हो या अज्ञानी सभी दीपावली का उत्सव बडे उत्साह के साथ मनातें हैं।

दीपावली केवल खाने-पीने तथा आनंद करने का उत्सव नहीं है। इसके साथ जीवन में आय-व्यय का लेखा जोखा करके धन संपत्ति का हानिलाभ के गणित करने का दिन नहीं है बल्कि दीपोत्सव का उत्सव मांगलिक शुभ दिन कहा जाता है। नंद संतो ने अपने कीर्तन में लिखा है कि ..... आज दीपावली रे ..... आज दीपावली रे ..... आज दीपावली रे ..... सवरमो दहाडो रे, सवरमो दहाडो रे ..... सवरमो दहाडो रे ..... सखी हेडे ते हरख न मांय।

इन दिनों को जो व्यक्ति अपने अंतर में रखता है वह पवित्र हो जाता है। उसका जीवन उज्ज्वल बनजाता है। दीपावली का उत्सव किस तरह मनाया जाय इसको श्रीजी महाराजने स्वयं उत्सव करके समझाया हैं। अपने आश्रितों के लिए उन्होंने प्रत्येक उत्सव करके दिखाया जिससे उनके आने वाले समय में कोई तकलीफ न हो और आश्रितजन आनंद के साथ उत्सव मना सकें।

जीवन में दीपावली के पर्व को जिसे दिव्य-पवित्र तथा प्रकाशमय बनाना हो तो सत्संगी लोग इन्द्रियो को तथा अंत:करण को शुद्ध पवित्र बनाकर श्रीजी महाराज जिस प्रकार दंढाव्य देश में सर्व प्रथम आदरज में १८७२ संवत में जो दीपोत्सव मनाये थे उस उत्सव लीला की याद करके अक्षरधामतुल्य दादा खाचर के दरबारगढ में श्री वासुदेव नारायण की ओसारी में सम्पन्न अद्‌भुत उत्सव में पहुंचजाना चाहिये।

नूतन वर्ष : जिसे बलिप्रतिपदा के रूप में भी जाना जाता है। जिस दिन प्रभुने वामन अवतार धारण करके वर्णाश्रम धर्म का उच्छेदन करने वाले बलि का पराभव किया उसी समय से यह बलिप्रतिपदा का उत्सव मनाया जाता है। बलि के गुणो का स्मरण करके अपने भीतर तथा खराब व्यक्तियों में भी शुभ गुण दिखाई देने की दृष्टिइस उत्सव से मिलती है।

स्त्री तथा धन के पीछे पड़ा हुआ मनुष्य असुरत्वको प्राप्त हो जाता है। इसीलिये दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी की तरफ पूज्य भाव तथा पवित्र भाव रखकर भातृद्वितीया के दिन स्त्री पूज्य है ऐसी भावना, प्रत्येक स्त्रियों में माता का भाव अर्थात् अपनी संस्कृति में स्त्रीमात्र की तरफ मा-बहन का भाव रखने का शिक्षण मिलता है। दीपोत्सव अर्थात् अज्ञान तथा मोहरूपी अंधकार से प्रकाश की तरफ जाने का उत्सव। दीपावली तथा नूतन वर्ष के दिन मानव के जीवन में प्रकाश, उत्साह, आशा, तथा आनंद की प्रेरणा देने वाला मंगल दिन है। इस दिन व्यक्ति प्रेम, भातृभाव,

एकता सहकार तथा एक दूसरे को पहचान कर ओतप्रोत होने का दिन है। अपने जीवन में मिला अमूल्य मानव तन तथा मन को निरामय बनाने के लिये पुरुषार्थ करने का यह दिन है। जो वर्ष में एकबार आता है।

नूतन वर्ष में मनुष्य नई वाणी तथा नूतन वस्त्र धारण करते हैं। सभी स्नेहीजनो को याद करके किसी के साथ यदि वैर भाव होतो हंसते हुए भेट कर (गले मिलकर) पीछे का सब भुला देते हैं। नये दिन सभी लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं और मुंहमीठा करते हैं। जो सारे वर्ष मंदिर में नही जाता वह भी नूतन वर्ष के दिन मंदिर अवश्य जाता है। सभी लोग संतो के चरण स्पर्श करते है। पुराने व्यवहार को पूर्ण करके नये काम काज का निर्णय करते हैं। आनंद में दिन पूर्ण करते हैं। भतूकाल के जीवन प्रसंग की भूल को सुधारने के लिये नूतन वर्ष आता है। जिससे श्रेय एवं प्रेम दोनो सिद्ध हो तथा भविष्य में उत्तम सिद्धि प्राप्ति हो सके। ध्येय प्राप्ति के लिये श्रेष्ठ पुरुषों का आश्रय लेना चाहिये। कारण यह कि यह निश्चित है कि आत्मा की उन्नति के लिये भगवान की कथा तथा सत्पुरुषों के आशीर्वाद के साथ पुरुषार्थ सबल साधन है।

जीवन में ध्येय-शांति तथा सुख प्राप्त करना हो तो नूतन वर्ष के दिन मनुष्य का जो विचार, वाणी तथा वर्तन है उसमें परिवर्तन लाना आवश्यक है। शुभ गुण हो तो शुभ लक्ष्य की प्राप्ति होती है। नूतन वर्ष एक संदेश देता है कि अपने जीवन की डोरी भगवान के हाथ में या भगवान के संतो के हाथ में सौंप देनी चाहिये। इससे जीवन की यात्रा मंगलमय बनेगी।

हम यह जानते हैं कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन अपने जीवन की लगाम परमात्मा के हाथ में सौंप दी थी, जिससे वह बड़े-बड़े योद्धाओं के सामने तथा अठ्ठारह अक्षौहिणी सेना के सामने अकेला विजयी हुआ था तथा भगवान के परमपद को प्राप्त किया था। इसी तरह हम भी नूतन वर्ष के दिन भगवान में आत्म समर्पण करके उन्हीं के हाथ में अपने जीवन की डोरी सौंपदें तथा उहीं की आज्ञा में चलें तो यह लोक तथा परलोक दोनो बनेगा।

नूतन वर्ष अर्थात् पुराने रीति रिवाज तथा अन्य कुरीतियों में से बाहर निकलकर एकांतिक सत्पुरुषों की आज्ञा को माथे पर चढाकर जीवन में नतून-राह पकड़कर तथा नूतन संकल्प लेकर नूतन निर्णय करने का दिन है। दीपावली के दिन बाहर दीपक प्रगटाने के लिये तो अच्छा है लेकिन इसके साथ अन्तर में दीपक स्री प्रकाश प्रगट करने से आध्यात्मिक तथा भौतिक शांति मिलती है। तथा पुराने कलह-राग-द्वेष सभी नष्ट हो जाते हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होने वाला नूतन वर्ष नई दिशा का सूचक है। इस दिनलोग गोवर्धन पूजा भी करते हैं। गोवर्धन पूजा से तात्पर्य यह है कि प्रभु को सत्ताधीशों की पूजा हो यह स्वीकार्य नहीं। ऐसा उन्होंने संदेश दिया है। इसदिन भगवान ने ग्वालबालों के साथ गोवर्धन की पूजा की थी उसी समय से भगवान की आज्ञानुसार गोवर्धन की पूजा प्रारंभ हुई, और आज भी प्रारंभ है।

नूतन वर्ष को सुन्दर तथा लाभदायी बनाने के लिये मनुष्य अपने मकान को साफसूफ करता है। घर में पुराने वस्त्र या पुराने वासन को धो-पोंछकर सजाकर रखते हैं। दीपोत्सव के अवसर पर लोग पांचदिन तक पूजा करते हैं। इस अवसर पर एक दूसरे आपस में नूतन वर्ष का नतून संदेश भेंजते है, आत्मीय संबंधियों को प्रणामाशीर्वाद ले दे करते हैं।

विगत वर्ष में योग्य-अयोग्य का अवश्य चिंतन करना चाहिये जिससे आगामी वर्ष में उसका पुनरावर्तन न हो। नूतन वर्ष के आरंभ में वर्षो से नूतन वर्षाभिनंद भेंजने की प्रथा चली आ रही है। हम भी नूतन वर्ष के प्रारंभ में जीवात्मा के कल्याण के लिए शुभ संकल्प करके सत्संग में खूब आगे बढकर श्रीजी महाराज तथा पूज्य आचार्य महाराजश्री तथा संतो की

प्रसन्नता प्राप्त करें। नूतन वर्ष के अभिनन्दन के साथ आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील बने।

श्रीजी महाराज की संकल्प सिद्धि मूर्ति श्री नरनारायणदेव तथा श्रीहरिकृष्ण महाराज के सन्मुख खड़ा होकर संकल्प करें कि -

● सर्वोपरि, सर्वावतारी इष्टदेव श्रीहरि के विना जगत में दूसरा कोई कर्ता नहीं तथा कर्मफल प्रदातानहीं ऐसी दृढता करें।

● ऐसे सर्वोपरि भगवान के स्वरूप में ही आपकी इन्द्रिया तथा अंत:करण अविरत रमण करता रहे एवं भगवान के धाम में रहकर श्रीहरि के चरण की सेवा के सिवाय कोई इच्छा नहो।

● अपनी जीवन रूपी नौका परमात्मा के हाथ में सौंप कर चिंता मुक्त होकर श्रीजी महाराज तथा बड़े महापुरुषों द्वारा प्राप्त नियमो का पालन करते हुए महात्म्य ज्ञान के साथ भक्ति करनी चाहिये।

● भक्ति के साथ-साथ एकान्तिक सत्पुरुष जो श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करलिये हैं, उन्हीं का संग करेलेकिन दूसरेका दोष ग्रहण न करे।

● चारप्रकार के कुसंगी तथा आठ प्रकार के अंत: शत्रुओं से दूर रहे। जीवन में देह-गेह-अहं तथा ममता का दूर से परित्याग करके श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करनी चाहीये।

● स्थूल सूक्ष्म तथा कारण शरीर से प्रभु की सेवा में रहे। मैं आत्मा हूँ, देह नहीं, इसका सदा ज्ञान रहे तथा परमात्मा की आज्ञा के साथ "निजात्मानं ब्रह्मरूपम्" होकर भक्ति करें तथा दासानुदास होकर सत्संग करे। ऐसी बुद्धि हो।

● सत्संग में निश्चय, नियम, पक्ष की भावना स्थायी रूप से बनी रहनी चाहिये। जीवन में भगवान तथा उनके एकांतिक भक्तों से कितना दूर रहा जा सकता है। इसका ख्याल रहे तथा श्रीजी महाराज ने वचनामृतमें जैसा कहा है उसी के अनुसार वर्तन करने का अनुसंधान बना रहे।

● भगवान तथा भगवान के भक्त, संत के पास क्रोधमान, ईर्ष्या, कपट का त्याग करके जाना चाहिये। सत्संग की स्थापना के बाद प्रतिष्ठित मूर्तियों की स्थापना के समय श्रीजी महाराज ने कहा था कि इस मूर्ति तथा अक्षरधाम की मूर्ति में कोई अंतर नहीं है। इसी तरह हम भी हृदयमें विचार करें कि भगवान की जो भी प्रतिष्ठित मूर्तियां है वे सभी साक्षात् परमात्मा की स्वरूप है, यह विचार नूतन वर्ष से उतारने का प्रयास करना चाहिये।

● कभी किसी का अवगुण लिये बिना देवता, शास्त्र, सत्पुरुष की निन्दा नहीं करनी चाहीये। सुनना भी नहीं चाहिये। ऐसा दृढ निश्चय करके वचनामृत के प्रथम के ६(छठ्ठे) वचनामृत के अनुसार अपने भीतर के अवगुणों को दूर करना चाहिये।

● बड़े पुरुष जैसा कहें तथा शास्त्रों का जो वचन उसे हितकारी मानकर गर्भवास में जाना न पड़े ऐसा जीवन जीने का निश्चय करके भगवान श्री स्वामिनारायण द्वारा बताये गये धर्म-मर्यादा का पालन करके आत्मश्रेय करलेना चाहिये।

इसलिये नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में मानव जीवन का ध्येय स्वस्वरूप की पहचान करना, तथा हृदय में विराजमान परमात्मा को आत्मसात् करना। कारण यह कि जीवात्मा परमात्मा का साक्षात्कार एकात्मभाव से सम्भव है।

जीव अनादि काल से दीपावली का उत्सव मनाता आ रहा है लेकिन आज तक किसी जीवात्मा का दीप जला हो ऐसा लगता नहीं है। कारण यह कि जीवन में जीवको पुन: जन्म न लेना पड़े ऐसा दिन प्राप्त हो तभी दीपक जला कहा जाय।

जब मनुष्य को आत्मस्वरूप का ज्ञान हो तथा बाद में अंतर्यामी के रूप में विराजमान परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान हो तभी अज्ञानरूपी अंधकार दूर होकर अलौकिक प्रकाश तथा आनंद का अनुभव होने पर दीप जला कहलायेगा। जीवन में अंदर एवं बाहर फैला हुआ अंधकार दूर होकर दिव्य प्रकाश प्रगट हो यही जीवात्मा की दीपावली है। तभी जीवात्मा को

पुनः जन्म मरण के फेरे में आना नहीं पडेगा । ऐसा जब दिन आ जाय तभी दीप जला कहलायेगा । इस लिये हे युवानो ।

नूतन वर्ष के मंगल प्रभात में सभी भक्तजन तथा नवयुवान मित्र सभी लोग अर्जुन की तरह शरणागति स्वीकार करके भगवान की स्वस्थ निष्ठा दृढ करके अवशिष्ट जीवन में सच्चे सुख, सच्चालाभ, आनंद, ध्येय, इत्यादि का संपादन करके परमात्मा के पास जैसे अर्जुन ने स्थान प्राप्त किया था इसी तरह भगवान के चरण कमल में स्थान मिले ऐसी प्रार्थना के साथ...

नूतन वर्ष में किया गया शुभ संकल्प शुभ संकल्प ही नहीं रहे जीवन में क्रियात्मक बने इसके लिये सत्संग तथा समाज में सद्विचार तथा सत्क्रिया के साथ आगे बढकर जीवन में योग्य दिशा के लिये सतत प्रयत्नशील रहना चाहिये ।

भोग तथा स्वार्थमय जीवन जीने वाले मनुष्य को चाहिये कि पीछे के राग-द्वेष को भूलकर नूतन प्रेरणा लेकर आशा तथा उत्साह के साथ सत्संग तथा समाज के लिये नित्य नवयुवान बनकर संदेश देते रहें । नूतन वर्ष में जीवन प्रेरणादायक बनकर रहे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में करोडो साष्टांग प्रणाम ।

युवा मित्रो ! नूतन वर्ष अर्थात् अपने जीवन में निश्चित किये हुए ध्येय में सदा निर्विघ्न आगे बढते रहना का नूतन वर्ष अर्थात् दीपावली । संक्षेप में इतना कहना है कि अपना जीवन मात्र सत्संग के लिये हो ऐसी श्रीहरि के चरणो में नूतन वर्ष की प्रार्थना

सिद्धपुर नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में कार्तिक शुक्ल-१४ बुधवार ता. १२-११-०८ के दिन आदि आचार्य अयोध्याप्रसाजी महाराज द्वारा प्रतिष्ठित ऐसा श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज का वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम के साथ सम्पन्न होगा ।

-महंत स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी

पृष्ठ १८ का चालू .....

भक्तिसुधा

आंख में पूरा ब्रह्मांड दिखाई दिया । इसी तरह मुख में भी ब्रह्मांड दिखाये थे । भक्तिमाता के अक्षरवास के बाद घनश्याम सुवासिनी भाभी को माता के रूप में मानते थे । घनश्याम महाराज जब तक धरती पर थे तब तक माता ही समझे । एक समय सुवासिनी भाभी तथा अन्य महिलायें गीत गा रही थी, वहाँ घनश्याम तथा छोटे भाई इच्छाराम गीत गाने को बैठे थे । उस समय गोलोक में से गोपिया श्रीहरि को प्रसन्न करने के लिये उसी गीत में आकर बैठ गयी । उस समय सुवासिनी भाभी ने नवागन्तुक महिलाओं के विषय में पूछा । आप लोग कौन है ? घनश्यामने कहा ये गोपियां है हमें प्रसन्न करने के लिये आयी है । बाद मे गीत विधिपूर्ण होने पर गोपियां महाराज के तथा सुवासिनी भाभी के चरण स्पर्श करके अदृश्य होगयी।

घनश्याम ने सुवासिनी भाभी को जो वचन दिये थे वे सभी वचन पूरे किये थे । घनश्याम महाराज किसी को बिना बताये ११ वर्ष की उम्र में घर से निक ल पड़े थे । उस समय यदि किसी को अधिक वियोग था दुःख था तो मात्र सुवासिनी भाभी को था । उन्होंने अपने पति को तथा गाँव के लोगों को घनश्याम को खोजने के लिये भेजा था । जब नहीं मिले तो मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी थी । बाल्यावस्था में बहुत सारे आश्चर्यकारी चरित्र सुवासिनी भाभी को घनश्यामने दिखाया था । जिससे भाभी में घनश्याम के प्रति कभी मनुष्यभाव नहीं आया । बाल घनश्याम के चले जाने पर उनकी बाल लीलाओं की वे याद करती रहती । ऐसी वे भाग्यशाली सुवासिनी भाभी थी ।



पहला घूंट मीठा

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी

वासना की ऐसी रीति होती है कि प्रारम्भ मधुर होता है । पहला शब्द याद रखने लायक है । सभी घूंट मीठे नहीं होते मात्र प्रथम घूंट मीठा होता है।

एक समय का अनुभव सम्भवत: आकर्षक हो सकता है परंतु बाद में विषाद का विराट विष चक्र प्रारंभ होता है । प्रत्येक समय वासना का प्रथम अनुभव मन को बहलाता है । परंतु उसका परिणाम हताशा के सिवाय कुछ नहीं होता है । अपने अनुभव से मानव सीख नहीं लेता । प्रथम अनुभव को जो स्थाई मान लेता है वह मूर्ख है।

स्वार्थ के व्यापार मे मनुष्य सदा सावधान रहता है । लेकिन दु:ख की बात तो यह है कि मनुष्य वासना के विषय में सदैव हार मानलेता है । प्रथमवार मिला हुआ भोजन आदमी के मान को भुला देता है । इसी तरह सेन्ट की मादक सुगन्धप्रथम वार में पागल बना देती है । आंखो को उत्तेजित करने वाला दृश्य प्रथम दर्शन ही आकर्षक होता है।

विषय सुखदायक होता है, यह मान्यता ही मनुष्य को विषयोन्मुख बनाती है । वचनामृत अन्त्य के तीसरेमें वंचविषयों से जन्म मृत्यु का योग वर्णित है।

वासना का प्रथम घूटं ही मीठा होता है । लेकिन इसका अंत तो जहरीला ही होता है।

प्रारंभ आकर्षक लेकिन समाप्ति भयंकर है । इसका क्या रहस्य हैं ? इसके सेवन से सुख मिलता है लेकिन परिणाम त्रास दायक है । लग्न उत्सव प्रसंग में एक घंटे के लिये भले ही आनंददायक हो लेकिन पीछे तो व्याधिकारक ही है । चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात ऐसी वासना की स्थिति होती है।

जिसके ऊपर विषय के बादल बरसे उसकी वासना के वन झड़जाने वाले हैं । भगवान के सिवाय जो जो संकल्प हृदय में होते हें वे सभी वासना ही है वृद्धावस्था जब आती है तब वासना की तरुणाई आती है । यही वासना व्यक्ति को मोक्ष से वंचित करती है।

कितने भक्त तो ऐसा कहते हैं कि महाराज तो हमारी वासना को हरा कर अक्षरधाम ले जायेगें । आज्ञा का पालन नहीं करना है पर आश्रय का बल प्राप्त करके सभी लोग सुख प्राप्त करते हैं । वासना तो दिन प्रतिदिन बढाते जाते है । तो ऐसे प्रभु के धाम की प्राप्ति कैसे होगी । कोई तो प्रभु के बल पर धाम की प्राप्ति की राह देखकर बैठा है । निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है -

धाम नहीं धक्का मलशे,
त्यारे आंख उघडसे गुलामनी
मारो मूकीनेआशरो
जे विषय सुखने वांधसे
ते सुख नही पामे स्वपने
पड्या दु:ख मां पचशे

भोग में पड़ा हुआ मनुष्य, कोल्हू में पड़ा हुआ तिल तथा चक्की में पड़ा हुआ गेहूँ इन तीनो की दसा अंत में एक जैसी होती है । चाहे ८० वर्ष का वृद्ध क्यों न हो जब विषय भोगने की वात आती है तब १६ वर्ष का युवान बन जाता है । वासना की करतूत कोई झूठी वात नहीं है । इस वासना को इसी देह से दूर करने का प्रयास न किया मात्र सांसारिक बोझा खींचने का प्रयास ही कहा जायेगा । जैसे कामधेनु को दूह कर कुत्ते को पिलाने वाली वात होगी ।

प्रसादी के दतुअन का पीलु वृक्ष (वरखड़ी)

- प्रहलादभाई विट्ठलदास पटेल (न्युजर्सी-करजीसणवाला)

श्रीजी महाराज दंढाव्य प्रदेश में जब विचरण करते तब करजीसण गाँव में गोविंदभाई पटेल के यहाँ अवश्य पधारते। गोविंदभाई श्रीजी महाराज की इच्छा के अनुसार वर्तन करते थे।

एकबार करजीसणमें वाधरोडा तालाब के किनारे श्रीजी महाराज संत-हरिभक्तों के साथ नानाभाई भट्ट के छोटे स्प में पधारे थे। तालाब में जलक्रीडा करते सभी को दिव्य लाभ दे रहे थे। काठी हरिभक्त भी महाराज की सेवा कर के प्रसन्न हो रहे थे। अगल-बगल के गाँव में रहने वाले हरिभक्त भी दर्शन करने आते।

वर्षा का समय था। तालाब भरपूर भरा था। एकबार नानाभाईने प्रातः भगवान के लिये बरखडी वृक्ष (पीलुवृक्ष) की ताजी दतुअन लेआये। भगवान अपने कुसुम जैसे दांतो को घिसने लगे। इस दृश्य को देखकर नाना भगत को हुआ कि "अहो ! सर्वोपरि भगवान आज मेरे घर पधारे है। सभी हरिभक्त दर्शन करके पावन हो गये, लेकिन सबसे भाग्यशाली तो यह पीलु वृक्ष है जिसी दतुअन है जो भगवान के काम आई। इस दतुअन को यदि जमीन में लगा दें वृक्ष हो जाय तो "दतुअन लीला" सभी के लिये स्मरणिका बन कररहे।

भक्त के सभी संकल्प भगवान जानते हैं। भक्त के भाव को पूर्ण भी करते हैं। भगवान जब दतुअन कर लिये तो बाद में नानाभाई बड़ी श्रद्धा के साथ उस दतुअन को गंगाजलिया कूँआ के पास जमीन में गाड़ दिये। बड़ी श्रद्धा से उसमें पानी तथा खाद डालते, जिससे वह वृक्ष का स्प हो सके। हुआ ऐसा ही, वह धीरे-धीरे उग कर वृक्ष हो गया।

राजकोट में गोपालानंद स्वामी के वचन से जैसे बदरी (बैर) के कांटे अपने आप गिर गये और मीठे फल आने लगे, यह प्रक्रिया आज भी विद्यमान है। ठीक वही स्थिति इस गाँव में पीलु (वरखड़ी) वृक्ष का स्वभाव बदल गया। अगल बगल के वृक्षों के (वरखड़ी) पीलु वृक्ष के पत्ते कड़वे लगते हैं किन्तु इस बरखड़ी वृक्ष का पत्ता मीठा लगता है। यह भगवान के प्रत्यक्षत्ता (साक्षात्) का परिणाम है।

आज भी वह वरखड़ी वृक्ष २०० वर्ष बाद भी वाधरोड़ा तालाब के किनारे प्रभु की दतुवन लीला की कहानी कह रहा है। थोड़ा समय के वीतने पर पतझड़ अवश्य आये हैं तथापि आज भी सुरक्षित है।

धन्य है यह प्रसादी का वरखड़ी जो वृक्ष आज भी भगवान श्री स्वामिनारायण की दतुअन लीला की ताजी याद दे रहा है। धन्य है वह वरखड़ी वृक्ष की जीवात्मा जो प्रत्यक्ष भगवान का साक्षात्कार किया है। धन्य है वह करजीसण गाँव की भूमि जहाँ प्रभु ३६ बार पधारकर पावन किये है।

विदेश का बाय एरमेईल चंदा (शुल्क) में वृद्धि

अपने "श्री स्वामिनारायण मासिक" पत्रिका के विदेश में बहुत अधिक सभ्य हैं। उन्हें विशेष सूचना है कि वर्तमान समय इन्डिया में पोस्ट विभाग ने विदेश बाय एर मेइल तथा सीमेइल का पोट्स खर्च तीन गुना बढा दिया है। जिससे अपने श्री स्वामिनारायण अंक का विदेश का बाय एर लाइफ सदस्य चंदा ५०००/- स्प्ये था जो अक्टूबर-२००८ से विदेश का बाय एर मेइल चंदा १००००/- स्प्ये के अनुसार चंदा प्रेषित करें।



श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल

अहमदाबाद मंदिर

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीराबाडी-बापुनगर)

स्वामिनारायण भगवान कहते है कि हे महाभाग । श्री नरनारायण के प्रादुर्भाव की बात में आपको बताता हूँ । यह कथा धर्मदेवने ब्रह्मा के पुत्र सनक ऋषि को सुनाई थी । सनक ऋषि एकबार घूमते हुए श्वेतद्वीप गये । श्वेतद्वीप इस पृथ्वी से ३२ योजन ऊपर है । वासुदेव भगवान का दर्शन करके धर्म देव के आश्रम में गये । विष्णुपुर नामक नगर के सभी स्थलों का दर्शन करते हुए सनक मुनि मणियों से सुशोभित, धर्मदेव के मंदिर की तरफ आये । मंदिर में अनन्त मुक्तों की सभा में धर्मदेव बैठे थे । सनक मुनि धर्मदेव को नमस्कार करके उसी सभा में बैठ गये । धर्मदेव के पूछने पर सनकमुनि ने अपना परिचय दिया । बाद में सनक मुनि ने कहा हे धर्मदेव ! हम आपका तथा आपके पुत्रों का इतिहास जानना चाहते हैं । हे महाभाग ! आप इस कथा को सुनायें ।

धर्मदेव समाधिस्थ हो गये । दो घडीतक समाधिमें रहने के बाद बाहर आये । तब सनकमुनि ने पूछा कि धर्मात्मा ! आप जिस स्थल पर रहते हैं उसी स्थल पर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, वासुदेव रहते हैं । आप किस देव का ध्यान करते हैं ? धर्मदेव कहते है हे - सनकमुनि ! मैं अपने हृदय में वासुदेव भगवान का ध्यान करता हूँ । वे वासुदेव भगवान साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण, परब्रह्म, श्री कृष्ण इत्यादि नामों से प्रसिद्ध हैं । वर्तमान में भी श्री नरनारायण के स्वरूप में बद्रिकाश्रम में विराजमान हैं । वही रमापति भगवान मुझसे चार रूप में प्रगट हुए हैं । धर्मदेव से भगवान चार रूप में कैसे प्रगट हुए है, इसको जानने की उत्कंठा देखकर धर्मदेव कहते है - हे सनक जहाँ भगवान की कथा होती है वहाँ सभी तीर्थ आकर निवास करते हैं । हे ब्रह्मन् ! सृष्टि का प्रलय होने के बाद अनादि श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वकीय अक्षर ब्रह्मरूप तेजोमय धाम में विराजमान थे । वे भगवान बाद में नूतन सृष्टि का विचार करके अक्षर में प्रवेश किये । अक्षर रूप होकर पुरुष में, पुरुष रूप होकर माया की तरफ दृष्टि किये । इसलिये महामाया से अनंत कोटि प्रधान पुरुष उसमें से महत्तत्व, उसमें से तीन अहंकार, उसमें से विराट पुरुष विराट पुरुष में से ब्रह्मा, विष्णु, शंकर उत्पन्न हुए । उन्हीं तीन देवो से मरिच्यादि प्रजापति पैदा हुए । इसके बाद अनंत ब्रह्मांड के नियन्ता ऐसे मूल पुरुष से हमारा जन्म हुआ । बादमें भगवान से दूर होने की बात सुनकर मैं उदास हो गया । हमारी उदासीनता देखकर भगवानने कहा हे धर्मदेव ! आप चिंता मत करो, हम आप से ही नरनारायण के रूप में प्रगट होंगे । अक्षराधिपति भगवान का यह वरदान प्राप्त करके हम पृथ्वीलोक पर आये । आत्मा तथा परमात्मा का साक्षात् ज्ञान बिना तप संभव नहीं, ऐसा विचार करके हम साबरमती नदी के किनारे आकर, पूर्णकुटीर बनाकर दुष्कर तप किये । सूखे पत्ते और वायु भक्षण करके देवताओं के वर्ष प्रमाण से १२ वर्ष तक तप किये । तब भगवान प्रसन्न होकर दर्शन देक र कहे हे धर्मदेव ! श्वेतद्वीप में जहां आपका



आश्रम है वहाँ आप जाइये। थोड़े ही समय वहाँ हम चारस्वरूप में प्रगट होंगे।

इस प्रकार सुन्दर सुखदायक बात करके श्री पुरुषोत्तम नारायण अदृश्य हो गये। उसी समय से हम इसी श्वेत द्वीप में रहते हैं। हे सनकमुनि। एक समय यहाँ महान आश्चर्य हुआ। हम यहाँ विशाल तेज का समूह देखे, उस तेज के समूह से प्रथम वासुदेव की मूर्ति कृष्ण प्रगट हुए। इसके बाद हरि तथा नारायण एवं नरइस तरह चार स्वरूप प्रगट हुआ। कितने विमुख तो ऐसा कहते हैं कि श्रीहरि नारायण के साथ भक्त स्वरूप नर को प्रतिष्ठित किये। तो हम भी भगवान के साथ भक्त स्वरूप साधु को प्रतिष्ठित करें इसमें क्या हानि ? ऐसे विमुख यह जान लें कि नर कोई भक्तरूप में मनुष्य नहीं है। परंतु भगवान चार स्वरूपों में से एक नरके रूप मेंभी प्रगट हुए थे। यह अद्‌भुत प्रसंग हुआ है यह जानकर प्रधान पुरुषादि ब्रह्मांड के ईश्वरादिक तथा ब्रह्मादिक देव आये, आकाश में आकर दुन्दुभिनाद के साथ पुष्पवृष्टि करने लगे। इसके बाद भगवान की स्तुति करने लगे। सभी देवों की इच्छा से वहाँ एक मंडप तैयारहो गया, उस मंडप में जो आश्चर्य हुआ, उसकी जो शोभा थी, उसका वृतान्त इस मैगजीन में लिखना सम्भव नहीं है। बृहस्पति, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, वरुण, शंकर, ब्रह्मा, इत्यादि देव परस्पर कहने लगे कि ऐसा महान आश्चर्य आजतक हम देखे नहीं। सर्व शक्तिमान भगवान श्री पुरुषोत्तम नारायण अपनी अद्‌भुत शक्ति के प्रताप को दिखाये हैं।

इसके बाद दिव्य मंडप में रत्नजडित मनोहर सुवर्ण के सिंहासन पर आदिनारायण विराजमान हुए। मंडप में उपस्थित सभी देवताओंने प्रणाम किया। बाद में देव, मनुष्य, नाग, गन्धर्व, सिद्ध, विद्याधर तथा अन्य भी अपनी पत्नियों के साथ प्रणाम किये, इसके बाद तपस्वी, ब्रह्मचारी, योगी, पर्वत, नदी, कल्पवृक्ष कामधेनु, सप्त समुद्र, इत्यादि मनुष्य रूप धारण करके वहाँ आये, गायक, नृत्यकार, वेदज्ञ, पौराणिक, स्तोत्रकार, दक्ष प्रजापति, कुबेर भंडारी, शेषनारायण, सूर्य, कल्पतरु, ब्रह्मादि देव, सनकादिक ऋषि, नारद तथा अन्य अनेक ऋषि-मुनि आकर प्रणाम किये। धर्मदेव ने कहा कि बाद में हम सभी विराम करके नारायण भगवान के पास बैठे थे। उसी समय लक्ष्मीजी, सरस्वती, दुर्गा, सावित्री, पार्वती, इन्द्राणी, इत्यादि अनेक देवियां नारायण भगवान की पूजा करने वहाँ आई। उस समय नारायण प्रभु ने कहा कि हम तथा नर दोनो को आठ प्रकार का ब्रह्मचर्य पालन करना है। इस लिये देवियाँ हमारा पूजन न करे। लेकिन हमारे भाई हरि तथा कृष्ण की पूजा करें। यह हमारा संदेश आप देवियों से कह दीजिये। बाद में वे देवियां नरनारायण भगवान की आज्ञानुसार उनके भाई हरि तथा कृष्ण की पूजा कीं। नरनारायण भगवान को रत्न, सोना, रुपा, मोहर, अलंकार, वस्त्र, इत्यादि भेंट दी जो ब्राह्मणो को दे दी गयी।

धर्मदेव ने कहा हे सनकऋषि ! यह विधिपूर्ण होने के बाद चारो भाइयों में से नारायणने मुझे कहा हे पिताजी ! पृथ्वी ऊपर आप जहाँ तप किये थे उसी नदी में स्नान करने हम जा रहे हैं। तब तक आप हम सभी के लिये भोजन तैयार रखियेगा। चारो भाई साबरमती नदीं में आकर स्नान करने लगे। जिसकी कथा नारायणघाट मंदिर के प्रकरणमें लेंगे।

(क्रमशः)



सत्संग सुरभि

यह भोजन याद करके रखना

- अतुल भानुप्रसाद पांधीवाला (अहमदाबाद)

पंचाला गाँव के अहीर बड़े खतरनाक गिने जाते थे। परंतु बाकरसाहब (कर्नल बोकर) के सहयोग से श्रीहरिने साँड़ जैसे मतवाले उन अहिरों को सियार बना दिया। झीणाभाई का जो दो वर्ष से अनाज दे नहीं रहे थें वह सब उन्हें लाकर दे दिये। इतना ही नहीं मांफी भी माँगे। जो दुष्ट प्रकृति के थे वे सभी महाराज के आश्रित हो गये। आषाढी सम्वत् १८६८ (सन १८१२) का यह कार्तिक मास था।

ठीक इग्यारह वर्ष के बाद संवत १८७६ में महाराज पंचाला में फूलदोलोत्सव किये तथा संतो के साथ रासोत्सव किये। दूसरे दिन सम्पूर्ण ग्रामजनो को भोजन कराने का निश्चय करके वहाँ के अहिरों को बुलाया।

अहंकारी वे सभी मान त्याग कर, मस्तक से पगड़ी उतार कर, हाथ जोड़कर महाराज के पास आकर बैठे। इग्यारह वर्ष से सत्संग के रंग में रंगे हुए धरती पुत्र आनन्दित दिखाई दे रहे थे। श्रीहरि के प्रति अनन्य निष्ठा दिखाई दे रही थी।

कल, हम आप सभी को भोजन कराना चाहते हैं। बोलिये कैसा भोजन बने ? साटा, जलेबी, मगज, मोहन थाल, बुंदी लाडू या मैसुर? महाराजने पूछा।

यह सुनक र सभी एक दूसरे के मुख को देखने लगे और आपस में गुसपुस करने लगे।

इस कोरे भोजन से हमारा पेट नहीं भरेगा। शेलण खिलाओ तो आये। भोला भाव से सभी ने अपने हृदय की वात कही। महाराजने पूछा शेलण क्या है?

प्रभु ! इस देशमें चावल, गुण, तथा घी डालकर जिसे बनाया जाता है उसे शेलण कहते हैं। "झीणाभाईने महाराज को बताया।" ठीक है, सभी को शेलण खिलायेंगे। सभी को शेलण खिलाने का निमंत्रण महाराज ने दे दिया।

सभी प्रसन्न होकर घर गये। कल महाराज स्वयं शेलण खिलाने वाले हैं। सभी के आनंद की सीमा ही नहीं थी।

महाराजने आदेश दिया : बड़े, बर्तन में चावल चढा दिया जाय, गुण अधिक मंगाया जाय, घी बड़ी कढाई में चढा दिया जाय।

महाराज का आदेश मिलते ही सभी तैयारी में लग गये। दूसरे दिन तो गाड़ियों में भर कर गुण आ गया। गरमागरम भात तैयार हो गया। एक बड़े कडाहे में स्वयं श्रीहरि घी गरम कर रहे थे। जिसकी सुगंधचारो तरफ फैल रही थी।

अहिरों की पंक्ति भोजन के लिये बैठ गई। चार अंगुल जितनी ऊँची कांसे की थाली सभी के सामने रख दी गयी। खोभा भरकर भात तथा गुण पिरसा जा रहा था। महाराज स्वयं कछाण मारकर घी परस रहे थे।

छैल छबीला श्याम सुंदर शेलण ऐसा सभी को खिलाया कि थाली में कोई हाथ डाल नहीं सके। जल्दी-जल्दी पिरसने से महाराज के मुखारविंद पर स्वेद विन्दु चमक रहे थे। अहिर इस लोभावनि मूर्ति को देखते जाते और खाते जाते।

अहिर खाने से नही थकते तथा महाराज पिरसने से

नही थकते।

"बस प्रभु बस ! अब रहने दीजिये। इस तरह शेलण आज तक कीसीने नहीं खिलाया। आज हम आपके हो गये, आप से हार गये ?"

"यह भोजन याद रखना" मंद मुस्कान के साथ महाराज मर्म वाणी बोले। अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति जो चाहे वह कर सकते है। बस यह भोजन चरित्र केवल याद रखने की वात थी।

विनोदी सुराखाचरने भी हामी मारा।

जो भोजन किया वह याद रखेगा ही लेकिन भोजन करानेवाले को भी याद रखेगा। जिन स्वरूपों का आज दर्शन हम सभी को हुआ है यह स्वरूप ये लोग अपने हृदय में अवश्य उतारेंगे। इसी में कल्याण छिपा हुआ है।

"अच्छा बापजी ! यह हम कैसे भूल सकते हैं ? इस तरह कहकर सभी प्रणाम करके प्रस्थान किये। महाराजने कहा चलो हम लोग भी शेलण खाते हैं। "खाना नहीं है पीना है - सुरा खाचरने कहा। सुरा खाचरको घी से लथपथ शेलण खाने की भूख लगी थी। चलें हम सभी साथ खाते हैं। महाराज सभीको शेलण का भोजन जिमाकर बाद में स्वयं खाने बैठे।

झीणाभाई तथा किसान वे आहिर भोजन करते हुए प्रभु की पिरसती मूर्ति को हृदय में उतारलिये थे।

ऐसा कहाजाता है कि उन अहिरों को अंतकाल में उसी शेलण परसते रूप में लेने आये थे। प्रसंग का निमित्त बनाकर प्रभु भक्तों को अपने स्वरूप की झांकी कराकर अंत में मोक्षगामी बनाने का यह अद्‌भुत रहस्य मात्र भगवान स्वामिनारायण में ही था।

नूतन वर्ष का दट्टा तथा कलंडर का प्रकाशन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी के मार्गदर्शन में नूतन वर्ष में ठाकुरजी का तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीका तथा श्री नीलकंठवर्णी आदि स्वरूपों की तस्वीरवाला कलन्डर तैयार किया गया है, जिसमें तिथि, त्यौहार-उत्सव इत्यादि का भी समावेस है। इसके साथ ही दट्टा का भी प्रकाशन हुआ है, इसमें भी तिथि, त्यौहार, उत्सव-पाटोत्सव की जानकारी दी गयी है। प्रत्येक हरिभक्तों को दट्टा तथा कलेन्डर मंदिर के साहित्य केन्द्र से ले लेना चाहिये।

कलेन्डर में सौजन्य - विज्ञापन हेतु

नूतन वर्ष के लिये ठाकुरजी तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के तस्वीर वाला-तिथि-त्यौहार-पाटोत्सव की जानकारी वाला सुंदर कलन्डर प्रकाशित किया गया है। जिसमें व्यापारी भाई अपने धंधा-व्यापार का विज्ञापन छपाकर खरीदना चाहते हों तो दीपावली से १५ दिन पूर्व कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठार में कोठारी स्वामी का संपर्क करके डिपोजीट भरकर पक्की रसीद लेकर अपने धंधा-उद्योग के विज्ञापन की जानकारी लिखाकर ओर्डर बुक करालेने की नम्र सूचना है।

सत्संग भावधारा

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जीवन भर की सदा दीवाली

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

सभी त्यौहारों में दीवाली का त्यौहार कुछ अलग लगता है। यह पर्व आनेवाला होता है तो घरो में तैयारी होने लगती हैं। घर की दीवाल को लोग साफ करने लगते हैं। चूना-कलर करने लगते हैं। बरतनों को साफसूफ करते हैं। नूतन वस्त्र खरीदने की तैयारी होने लगती है। यह सब नहीं भूलता केवल भूलजाता है तो मन का मार्जन करना।

सम्पूर्ण वर्ष भर बहु विधप्रवृत्तियों में लगे रहने वाले मन का मार्जन न किया जाय तो मन की धरती पर उगे सद्विचार के वृक्ष फल लगने से पहले ही करमा जायेंगे और आत्मा को फल का स्वाद भी नहीं मिल सकेगा है। परिणामतः पतन होने लगेगा। यह सत्य है कि जिसका मन सुधरा उसका मोक्ष सुधरा। मन का मार्जन करने के लिये अधोनिर्दिष्ट दृष्टांत प्रेरणास्प बनेगा।

एक पवित्र गुरुके आश्रम में रहकर कोई शिष्य भगवान का ध्यान करना सीखा। उसे ऐसी सिद्धि मिल गयी कि वह प्रभु को हृदय में प्रत्यक्ष देखने लगा। समय वीतते उस शिष्य के मन में संकल्प हुआ कि जो यह दिव्य दर्शन मुझे हो रहा है, इसका लाभ हम सभी को दें। इसके साथ ही मेरी ख्याति भी फैलेगी। इसलिये उसने नर्मदा के किनारे एक विशाल मंदिर बनवाया। उस मंदिर में वही स्वरूप प्रतिष्ठित किया जो अपने हृदय में देखता था। अब हुआ ऐसा कि जो स्वरूप वह अपने हृदय में देखता था वह अदृश्य हो गया। वह गुरुके पास जाकर यह सभी वृत्तान्त बताया। गुरुजी थोड़ीदेर के बाद कहने लगे। उस स्वरूप का हृदय में न दिखाई देना स्वकीर्ति की लालसा इसमें कारण बनी। अभी थोड़ा ही नुकशान हुआ है। अब आगे सावधान नहीं होगा तो, तुम्हारी सफल सिद्धि, असिद्धिको प्राप्त हो जायेगी। अब तुम्हे अपने मन का मार्जन करना पड़ेगा। तुम उसी मंदिर में झाडू लगाओगे। तथा मंदिर की धूल में लेटोगे। इसके साथ जितने लोग दर्शनार्थ आवें उन सभी कावंदन करना इस तरह करते एक वर्ष वीत जाय बाद में मेरे पास आना मैं तुम्हें पुनः मार्ग बताऊँगा।

गुरुके मार्ग दर्शन में एक वर्ष ऐसा ही किया। बाद में पहले की तरह मानसिक सिद्धि प्राप्त कर लिया। इस तरह मन का मार्जन करने से मन सुदृढ-निर्मल बनता है। मुक्तानंद स्वामी ने भी कहा है-

वेगे वहता वारी मां प्रतिबिंब न भासे रे।
एम डगमगे दिल ज्यां लगी न ब्रह्म प्रकाशे रे॥

इस तरह जब तक मन स्थिर न हो, मन में अनेक प्रकार के दोष भरें हो, तो परमात्मा उस मन में कभी निवास नहीं करता। स्वामिनारायण भगवान के अनन्य भक्त शिवलालभाई ने पूछा स्वामी, आज आप पूजा में क्यों खड़े हो गये। तब स्वामी ने बताया कि मैं पूजा के समय तुम्हे देखने नहीं आता लेकिन भगवान तुम्हारी भक्ति के वश में होकर तुम्हारी पूजा स्वीकारने के लिये प्रत्यक्ष पधारते हैं। उन्हीं का दर्शन करने के लिये हम पधारते हैं। आज आधी पूजा में से तुम्हारा मन अन्यत्र चला गया तो भगवान भी चले गये तो मैं भी खड़ा हो गया। मन की चंचलता, मन की मलीनता, मन के विक्षेपो को दूर करने के लिये नूतन वर्ष के आंरभ में संत समागम के बाद भगवान स्वामिनारायण को हृदय में धारण करके कृतनिश्चयी बने तो अपने लिये दीवाली जीवन भर की दीवाली बन जायेगी।

भक्तजनों ! दिवाली में मन स्थी मंदिर को साफ-सूफ करके, निर्मल बनाकर रखेंगे तो अवश्य

परमात्मा का निवास होगा। जहाँ परमात्मा का निवास होता है वहीं सुख-शांति, आनंद, लक्ष्मी, विजय इन सभी की प्राप्ति अपने आप होती है।

●

पहले से सावधान रहना

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक फेरीवाला था। फेरीवाला कपड़े का धंधा करता था। कपड़ा बेचने के लिये वह एकबार नगर की तरफ गया। नगर के दरवाजे पर बड़ी बड़ी मूंछवाला, कंधे पर बन्दूक लिये हुए एक सिपाही खड़ा था। वह फेरीवाला ज्यों दरवाजे के भीतर प्रवेश किया कि उसने कहा ओ भाई कहाँ भीतर जा रहे हो। फेरीवाले ने कहा मुझे व्यापार करने के लिये नगर में जाना है। ऐसे तुम नहीं जासकते। पहले कुछ नगद नारायण निकालो। फेरीवाले ने कहा अरे भाई ! पहले व्यापार तो करने दो बाद में आप को दूंगा। उस चौकीदार ने भीतर आने नहीं दिया तो वह नगर के बाहर घूमने लगा कि कहीं अन्यत्र से नगर के भीतर घुसने का दरवाजा मिल जाय लेकिन ऐसा हुआ नहीं वह पूरी रात कडाकती ठन्ढी में ठुठवाते विता दिया। सारी रात मच्छर और कुत्तो से परेशान हुआ। बाहर का विस्तार भी बहुत गंदा था। दुर्गंधमय सारा वातावरण था। चोरों से डर बनी रही। जिससे रातभर जगना पड़ा। खूब पश्चाताप किया। अरे ! थोड़ा पैसा देकर नगर के भीतर चला गया होता तो व्यापार भी हो गया होता और शांति से रात भी वीत गई होती। कुछ खाने को भी मिलता। चोरों की डर भी नहीं होती। इसके अलांवा अन्य समस्या भी नहीं होती।

अब वह प्रातः काल की प्रतिक्षा करने लगे। ज्यों प्रातः हुआ कि अपने माल सामान के साथ उसी नगर के दरवाजे पर जहाँ वह चौकीदार था पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर चौकीदार से कहा अरे भाई आप अब कुछ भेंट ले लीजिये और मुझे भीतर आने दीजिये। तब उस चौकीदारने कहा यहीं पहले कर लिये होते तो यह सभी तकलीफ नहीं हुई होती।

मित्रों ! इस उपरोक्त बात से समझने लायक है कि जीवात्मा को मोक्षस्थी नगर में तभी जाने को मिलेगा जब वह परमात्मा के बनाये नियम का पालन करेगा। अन्यथा इसके सिवाय हजारों जन्मतक भटकना ही पड़ेगा। मोक्ष नहीं मिलेगा। निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है -

धाम नहीं धक्का मलसे
त्यारे उधडशे आँख गुलामनी।

इसलिये चतुराई से इस जन्म में ही नियम, निश्चय उपासना द्वारा प्रभु को प्राप्त करने का उपाय कर लेना चाहिये। जो प्रभु को प्राप्त करने के लिये भजन, भक्ति, सत्संग तथा नियम का पालन करते हैं तो उनके लिये -

जेने जोईये ते आवो मोक्ष मांगवा रे लोल।
आज धर्मवंशीने हर नरनारी जेने जोईये ते ॥

नूतन वर्ष के प्रारंभ से हम दृढ संकल्प करे तथा प्रयत्न करें कि अपने लिये मोक्षस्थी द्वार अपने आप खुल जाय। इस द्वार को खोलने की चाभी भगवान स्वामिनारायणने वचनामृत में बताई है। "जिस तरह जीव को अपने संगे संबन्धी में दृढता होती है ठीक उसी तरह यदि भगवान में दृढता हो तो या भगवान के संतो में निष्ठा होतो उस जीव का मोक्ष मार्ग खुल जाता है।

मूली मंदिर में नये महंत स्वामी की नियुक्ति

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के महंत पद पर स.गु. शा. स्वामी नारायणदासजी गुरुस.गु. शा.स्वामी केशवजीवनदासजी की नियुक्ति किया है।



भक्ति सुधा

यहाँ भी ब्रह्मानंद स्वामी का ही चलता है

- पार्षद सविताबहन गुरु सां.यो. बचीबा (हवेली-जेतलपुर)

ब्रह्मानंद स्वामी के पास दो साधु पढने आये, उस समय मूली मंदिर का निर्माण कार्य चल रहा था। इसलिये स्वामी थोड़ा समय पढाकर कार्य देखने चले जाते थे। कुछ करने योग्य काम होता तो करने भी लगते। कभी गारा माटी का काम करने लगते तो कभी ईंटा-पत्थर उठाने का काम करने लगते। साथ में उन दोनों संतो को लेजाते, उनसे भी करवाते। एक दिन उन संतो को हुआ कि स्वामी पाठ पढाते है और काम भी कराते है। पढना कम होता है तो पाठ कब पूरा होगा ? इसलिये यहाँ नही पढना, अन्यत्र किसी अन्य साधु के पास अभ्यास करेंगे।

स्वामी की इच्छा के विना दोनो साधु गढपुर चले गये। वहाँ दोनो संतो से किसीने पूछा कि आप मूली में ब्रह्मानंद स्वामी के पास पढने गये थे। वापस क्यों आगये। विद्यार्थी संतो ने कहा पढने का आनंद नहीं था। पूरे दिन ब्रह्मानंद स्वामी मंदिर की सेवा कराते थे, स्वयं भी सेवा करते थे। रात में पाठ सिखाते थे वह ठीक नहीं था, इसलिये गढपुर वापस आ गये।

दोनो साधु जब रात में शयन कर रहे थे उस समय समाधिहुई तो देखा कि अक्षरधाम में भी ब्रह्मानंद स्वामी मंदिर की सेवा कर रहे हैं। बाद में श्रीजी महाराज का दर्शन करने गये। तब ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा महाराज। इन दोनो साधुओं को यहाँ मत रहने दीजिये। इन्हे मंदिर की सेवा नहीं करना है। केवल पढना है। सेवा करने की डर से गढपुर चले गये, इसलिये इन्हें यहाँ से निकाल दीजिये। तब श्रीजी महाराजने कहा यहाँ से वापस चले जाओ। यदि हमें प्रसन्न करना हो तो ब्रह्मानंद स्वामी की आज्ञा में रहना होगा। विद्यागुरुको प्रसन्न करके ही विद्या प्राप्त की जा सकती है। तब उन विद्यार्थी साधु को हुआ कि यहां भी ब्रह्मानंद स्वामी का चलता है। इसलिये अब ब्रह्मानंद स्वामी के पास ही पढने जाऊँगा। जब समाधिसे जागे तो स्वयं को पूर्वानुभूति जैसी हुई थी वैसा ही वे किये। मूली जाकर ब्रह्मानंद स्वामी से विद्याभ्यास करने लगे। गुरुकी कृपा से बहुत उत्तम विद्या प्राप्त कर लिये। बाद में अपने ज्ञान से संत-हरिभक्तों को प्रसन्न किये। सेवा करने से तथा संतो की कृपा से अन्तःकरण पवित्र होता है। निर्माणी पना आता है। थोड़े परिश्रम से अधिक विद्या प्राप्त होती है। सेवा तो सद्भागी ही करते है। इसलिये जिसे विद्याप्राप्त करनी हो वे पहले माता-पिता गुरु तथा देव की अच्छी तरह सेवा करे तो विद्या सरलता से मिलजाती है।

•

सहज में कल्याण करे सहजानंद

- हसुबहन एम. व्यास (नारायणपुरा-अमदावाद)

वर्तमान में सफर करना सरल हो गया है, क्योंकि पहले की अपेक्षा साधन अधिक प्रणाम मे सुलभ हो गये हैं। सड़के (रास्ते) अच्छी हो गयी हैं। परंतु आज से करीब दोसो वर्ष पहले यात्रा विकट थी। रेगिस्तान को पार करना बड़ा कठिन था। चोर-लुटेरे रास्ते में लूट लेते थे। परंतु भगवान की शरणागति वाले भगवान की शरणागति को दूर तक खोजलेते थे। ऐसे कल्याण की चाहना वाले कच्छ के हरिभक्तों को समाचार मिला कि प्रगट भगवान सौराष्ट्र के गढपुर में विराजमान है। सभी हरिभक्त खूब प्रसन्न हुए। लेकिन कच्छ से विकट रास्ते को पार करके हरियाली वाला आम्र वृक्षो का बगीचा आया। हरिभक्तों ने विचार किया हरे हरे आम के फल लगे है, यहीं थोड़ा आराम करके फल भी लेते चलें। ऐसा विचार करके बगीचे की रखवाली करने वाले से पूछकर कुछ आम्र फल खरीदकर साथ लेजाने के लिये तथा भगवान को देने का मानसिक संकल्प किये। लेकिन रखवाले ने कहा कि ये सभी आम के फल मोतियावाला बापू के लिये हैं। यह हम नहीं दे सकते। कच्छ के हरिभक्तोंने कहा अरे भाई हम तो ब्रह्माण्ड के अधिपति बापू को देना चाहते हैं। इसलिये यदि आप देंगे तो भगवान श्री



स्वामिनारायण आपके ऊपर भी प्रसन्न होंगे । यह सुनकर रखवाले के मन में पवित्र विचार आये और वह अच्छे अच्छे आम्रफल पेड़ से उतारकर देते हुए कहा कि यदि वे भगवान हों तो उन्हीं के काम आवे तथा आपलोग भी भावना से खिलाना चाहते हैं इसलिये ले जाइये । कच्छी हरिभक्त प्रसन्न हो गये और स्वामिनारायण भगवान की धून करते हुए गढपुर पहुँच गये । श्रीजी महाराज को आम्रफल भेंट किये । श्रीहरि खूब प्रेम से ग्रहण किये । उधर आम की रखवाली करने वाला यह भूल गया था कि मैंने भगवान के लिये आम्रफल दिया था, लेकिन प्रभु तो अंतर्यामी है, जब उस आम के रखवाले की मृत्यु हुई तो प्रभु उन्ही आम्रफलों के साथ लेने आये । जब उसने पूछा आप कौन है तब प्रभु ने कहा जिसके लिये तुमने आम्रफल दिये थे वहीं मैं भगवान स्वामिनारायण हूँ । अब आपको अपने धाम में लेजाने के लिये आया हूँ।

एक पवित्र कार्य करने से तथा भगवान के लिये अर्पण की भावना के कारण स्वयं भगवान लेने आये । श्रीजी महाराज पृथ्वी पर अवतार लेकर छोटे-बड़े सभी का कल्याण किया और आज भी कल्याण करते रहते हैं । अन्तकाल के समय में स्वयं लेने आते हैं । तो ऐसे दयालु भगवान की आज्ञा में रहे जिससे सरलता से कल्याण सम्भव हो सके । कच्छ की एक महिलाथी जिसने भूज के श्री घनश्याम महाराज को हाथ की घड़ी दी । प्रातः सात बजे का समय था । महिलाने श्री घनश्याम महाराज की प्रार्थना करते हुए कहीं कि ये घड़ी पहनकर आप मुझे लेने आइयेगा । जब उस महिला को धाम में जाने का समय आया तब श्रीहरि वही घड़ी पहनकर उस महिला को लेने आए । उससे कहने लगे कि देख वही घड़ी पहनकर तुम्हे लेने आये हैं । तैयार हो जा ! वह महिला बड़े आनंद के साथ शरीर का त्याग की ।

●

सुवासिनी भाभी

- राधाबहन चंपकभाई भोरवलिया (सुरत)

सुवासिनी भाभी श्रीजी महाराज के बड़े भाई रामप्रतापजी जो शेष नारायण तथा बलराम के अवतार थे । इनकी अर्धांगिनी जो रेवतीजी थी । कृष्णावतार में श्रीकृष्ण परमात्मा की भाभी तथा श्री स्वामिनारायण भगवान के अवतार में सुवासिनी भाभी के रूप में थी जिन्हे महाराज माता तथा भाई को पिता मानते थे । ऐसी सुवासिनी भाभी मायके से जब ससुराल आई । भाभी के मायके में भी घनश्याम महाराज बहुत सारे चमत्कार दिखाये थे । सुवासिनी भाभी भक्तिमाता तथा धर्मपिता की बड़ी बहू थी । सबसे बड़ी भाग्यशाली सुवासिनी भाभी थी, कारण यह कि उन्हें घनश्याम महाराज को गोद में खेलाने का अवसर प्राप्त हुआ था । अपने हाथों से भोजन कराने का अवसर मिला था । भक्ति माता के बाद भाग्यशाली मात्र सुवासिनी भाभी थी ।

एक समय घनश्याम महाराज खेलकर आये तो खूब भूख लगी थी सुवासिनी भाभी ने उन्हें खाने के लिये दी । उधर घनश्याम कूएं पर पग धोने गये । भाभी वहाँ जाकर अपने हाथों से पग धोने लगी तो चरण में सोलह चिन्ह देखीं । हाथ में चक्र का चिन्ह देखीं । फिर घनश्याम से कहने लगी कि घनश्यामजी ! आप तो भविष्य में राजाधिराज होंगे । उस समय आप हमें याद करेंगे न ? तब घनश्याम महाराजने कहा यदि ऐसा हुआ तो वह राज्य आपकी गोद में डाल दूंगा । ऐसा ही हुआ जब राज्यगद्दी पर बैठना हुआ तो सुवासिनी भाभी के पुत्र को धर्म की गद्दी अर्थात् स्वयं का पद उन्हें देदिया ।

भक्तिमाता ने जीवन की अंतिम घड़ी में सुवासिनी भाभी को तथा रामप्रतापजी को कही कि तुम्हारे छोटे भाई घनश्याम साधारण मनुष्य नहीं है । इच्छारामजी का तथा घनश्याम का हमारी अनुपस्थिति में विशेष ध्यान रखना । धर्म पिता से भी कहीं कि इन घनश्याम की वृत्ति घर में नही है, त्याग में है । ये साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण हरिकृष्ण स्वामिनारायण है । इसके बाद सुवासिनी भाभी तथा इच्छाराम घनश्याम में निश्चित भाव रखकर खूब प्रेम करते थे ।

एक समय घनश्याम की दाहिनी आंख आ गयी । सुवासिनी भाभी ने कहा दाहिनी आंख आ गयी है । सुवासिनी भाभी ने कहा घनश्यामजी आप की आंख लाल हो गयी है । लाइये आपकी आंख में अंजन लगादूं । आंख खोलकर अंजन करते समय उनकी

अनुसंधान पृष्ठ ८ पर.....

प्रश्न पेटी

साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ कृतघ्नी किसे कहा जाता है शिक्षापत्री के आधार से समझाइये ?

प्रश्न : २ ''वचन लेती जाणे सुख लेशुं रे... ते तो के शुं केवाने जे, रेशुं रे, ज्यारे पश्चिम प्रगटशे रवि रे, थाशे जीव रहित पृथ्वी रे, तोय न थाय रीत ए नवी रे..... वचनलोपी ..... इन पंक्तियों के रचयिता कोन ?

प्रश्न : ३ स.गु. गोपालानंद स्वामी एक समय बैर वृक्ष के नीचे विराजमान हुए । उस समय उनके मस्तक की पगड़ी में बैर की एक डाली फस गई । यह देखकर गोपालानंद स्वामी की दृष्टि पड़ते ही उस बैर को कहने लगे कि....।

प्रश्न : ४ प्रेमवती माता को कार्तिक शुक्ल पक्ष में ज्वर आया था । तीनो पुत्र सेवा कर रहे थे । माता में अतिशय स्नेह होने से श्रीहरि सेवा भाव में अधिक रहते थे । यहाँ परमात्मा का ही चिंतवन करते हुए ऐसी प्रेमवती माता को श्रीहरि परमात्मा ने अपने स्वरूप का ज्ञान, शुक्ल पक्ष की किस तिथि को दिया था ?

प्रश्न : ५ घनश्याम जब घर का त्याग किये तब प्रातःकाल सरयूनदी के किनारे नाव की प्रतीक्षा में खड़े थे घनश्याम की मृत्यु जानकर वे असुर दूसरे अन्य दैत्यों को अपना कृत्य कहने जा रहे थे उस समय उनकी मृत्यु हुई, ऐसे में असुरो की मृत्यु अचानक कैसे हुई ?

प्रश्न : ६ भगवान के स्वरूप का यथार्थ निश्चय हो तो वह कल्याणकारी गुण भगवान का है वही संत में आता है । यह किस वचनामृत में हैं ?

प्रश्न : ७ कैसे जाऊं पनियां रोक्यो पनघटवा.... खंधे कामरियां ने हाथ लकुटियां ..... यह सुंदर ठुंमरी रागके पद के रचयिता कौन है ?

सितम्बर २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) सर्ववैष्णवो के राजा श्री वल्लभाचार्य उनके पुत्र जो श्री विठ्ठलनाथजी, ऐसा उल्लेख शि.प. के १८१ वें श्लोक में किया गया है । (२) गोविंद शर्मा तथा दिनमणी शर्मा, का प्रथम उद्धव सम्प्रदाय के साधु प्रभुतानंदजी के साथ मिलन हुआ था । तथा उनका नाम स.गु. नित्यानंद स्वामी रखा गया । (३) सत्संगिजीवन के तींसरे प्रकरण के ४० वें अध्याय में कहा है । (४) लोया का १७ वां वचनामृत । (५) स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी । (६) शर्याति के पुत्र का पुत्र ''रेवत'' रेवत राजा के १०० पुत्र उसमें बडा पुत्र ''स्वम्म'' जिसकी पुत्री ''रेवती'' का लग्न (विवाह संस्कार) बलदेवजी के साथ हुआ । (७) स.गु. आधारानंद स्वामी ।

१. कंचनबहन बाबूभाई पटेल - रतनपर
२. सांख्ययोगी शिल्पा बहन शितल बहन - सुरेन्द्रनगर
३. अमृतलाल मोदी - सोजा
४. पटेल गोरधनभाई - सोजा
५. सांख्ययोगी भारती बहन, मंजु बहन -कालुपुरहवेली
६. अरविन्दाबहन एन. भावसार - चांदलोडीया
७. विणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
८. माधवजीभाई हरजीभाई -मोरबी
९. चंद्रिकाबहन एस. टांक - जीरागढ
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर - सीतापुर
११. भक्तिभाई कोलाभाई - अजुपुरा
१२. ज्योत्सनाबहन राजेन्द्रभाई - आणंदपुरा-कडी
१३. राजुभाई चन्दुभाई - आणंदपुरा
१४. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
१५. प्रफुलाबहन - उवारसद
१६. साकरबहन नटवरभाई पटेल - नांदोल
१७. अंजनाबहन मनुभाई पटेल - दहेगाम
१८. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
१९. सुजाताबहन रमेशभाई पटेल
२०. हेली, हार्द, कीरीटभाई पटेल - नरोडा
२१. दक्षाबहन घनश्यामभाई सोनी
२२. भावनाबहन कमलेशकुमार - खंधड़िया
२३. सांख्ययोगी कंचनबहन - ध्रांगध्रा
२४. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
२५. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
२६. विद्यार्थीनी बहन - मीरजापर-कच्छ
२७. देवीबहन हीरालाल दलासीया - मीरजापर-कच्छ

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में मनाया गया श्री गणपतिजी का रथोत्सव सम्पन्न

श्री स्वामिनारायण भगवानने उत्सव मनाने की परंपरा की जो स्थापना की थी वर्तमान समय में मूल संप्रदाय में भी यह परंपरा प्रवर्तमान है और उसकी उतरोत्तर प्रगति हो रही है।

भादो शुक्लपक्ष-११ जलझीलणी एकादशी के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में करीब २०० वर्ष से श्रीगणपति का रथोत्सव मनाते हुए शहर के राजमार्ग से बड़े गाजेबाजे के साथ नारायणघाट तक लेजाया जाता है, इस वर्ष भी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में आज्ञांकित संत, पार्षद तथा हजारों की संख्या में भक्तजन इस कार्य में जुड़े थे। वर्तमान समय में करीब पांच वर्ष से मार्ग में ट्राफिक समस्या तथा जनसंख्या की वृद्धि के कारण परिवर्तन करदिया गया है।

इस वर्ष ता. ११-९-०८ सोमवार को दोपहर १-३० बजे संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री आरती उतारकर श्री नरनारायणदेव का उत्सवी मंडल तथा संत-हरिभक्तों के साथ हवेली में पधारकर गणपति के रथ के साथ प्रस्थान किये थे। कालुपुर मंदिर से लांबेश्वर की पोल होकर केलीकोडोम रीलीफ रोड तक गाजेवाजे के साथ उत्सव करते हुए बाद में नारायणघाट पहुंचे थे। वहाँ पर श्री गणपतिजी का विसर्जन-आरती प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथ से हुई थी। सायंकाल ६ से ८ बजे तक ओरिएन्टल बिल्डींग से मंदिर तक संत मंडल, उत्सवी मंडल धून-कीर्तन करते हुए हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ पूज्य लालजी महाराजश्री खूब प्रसन्न मुद्रा में धीरे-धीरे चलकर कालुपुर मंदिर पहुंचे थे, वहाँ उत्सव की पूर्णाहुति करके स्व स्थान पधारे थे। इस प्रसंग पर महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी, को. रामानुज स्वामी, स.गु. जगत्प्रकासदासजी, वी.पी. स्वामी, ब्र. पूजारी स्वामी इत्यादि संत रथोत्सव में धून-भजन करते हुए वापस आये थे।

- शा. धर्मकिशोरदासजी

जीवराज मंदिर में अहमदाबाद मंदिर के कोठार के संतो द्वारा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से जीवराजपार्क श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रति एकादशी को कोठारी स्वामी तथा शा. धर्मकिशोरदासजी तथा अन्य संतोने रात्रि सत्संग सभा में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की महिमा तथा लीला चरित्र के साथ धर्मकुल की महिमा को समझाकर, व्यसन मुक्ति, सदाचारी जीवन जीने की परंपरा को दृष्टांत के साथ समझाया था। जीवराजपार्क, वासणा, पालड़ी तथा आंबावाड़ी विस्तार के हरिभक्तों को सभा में आने के लिये विशेष अनुरोधकिये है।

- भरतभाई ठक्कर

घाटलोड़िया सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से घाटलोड़िया में गोल्ड मेडालिस्ट ज्योतिषाचार्य शास्त्री श्री निलेशभाई वाधेला के निवास स्थान पर शा.स्वा. रामानुजदासजी तथा शा. धर्मकिशोरदासजीने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के जीवन कवन की लीला चरित्र तथा २०० वर्ष पूर्व के मनुष्यों की जीवन व्यवस्था, कुरिवाज, सामाजिक क्रांति, श्रीजी महाराज का उपदेश तथा नंद संतो द्वारा तत्कालीन समय में किया गया पुरुषार्थ - बड़े बड़े डाँकुओं को आश्रित बनाने की झलक संतो ने वर्णन किया था। इस के बाद संप्रदाय में धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को श्रीजी महाराज ने अपने स्थान पर स्थापित किया था। जो परम्परा आज भी अविरत चालू है। इस तरह इस वाधेला परिवार को संतोने आशीर्वाद दिया था।

- अल्पेश पटेल

न्यू दिल्ही श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से १०-९-०८ के दिन बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री जयंतीभाई लालजीभाई पटेल (अहमदाबाद) सहयजमान श्री महेशभाई, नरेन्द्रभाई, छोटुभाई, केतनभाई, कांतिभाई महेता तथा श्री शरदभाई जयंतीभाई टांक परिवारने लाभ लिधा था।

इस प्रसंग पर स्थानिक हरिभक्तोंने तथा यात्रिक हरिभक्तों ने बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का अभिषेक दर्शन करके तथा अन्नकूट दर्शन करके पूर्ण लाभ लिया था। दर्शनार्थी हरिभक्तों के लिये मंदिर में प्रसाद की सुंदर व्यवस्था महंत स्वा. देवप्रसाददासजी ने की थी।

- माधव स्वामी पुजारी

जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव संपन्न

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर में श्रावण कृष्ण-५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से

ठाकुरजीका षोडशोपचार पूजन, पाटोत्सव अभिषेक वेद विधिसे किया गया था।

इस प्रासंगिक सभा में जेतलपुर से पधारे हुए पू. पी.पी. स्वामी, माणसा के महंत शा. घनश्याम स्वामी, जयपुर के महंत देवस्वामी इत्यादि विद्वान संतो ने सर्वोपरि भगवान का माहात्म्य तथा धर्मवंशी की महिमा विधिवत् अपने प्रवचन में कही थी। यजमान परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्जन करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। स्थानिक तथा बाहर से आये हुए हरिभक्त देव दर्शन तथा आचार्य एवं संत दर्शन करके अपने जीवन को धन्य बनाये। *- वी.पी. स्वामी*

इडर श्री स्वामिनारायण मदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसादकी प्रेरणा से श्रावण मास में श्री गोपीनाथजी महाराज को भव्य झूले पर झूलाया गया। जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर यहाँ के अगल बगल के गाँवो के हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर दर्शन का लाभ लिये थे। रात्रि में धून-भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया था। रात्रि में १२-०० बजे "नंद घर आनंद भयो" के साथ श्री कृष्ण परमात्मा का प्रागट्योत्सव बड़े उल्लास के साथ मनाया गया। *- को. सत्यसंकल्पदासजी*

बोपल श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिरमें प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से आषाढ कृष्ण पक्ष-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक ठाकुरजी को विविधप्रकार के झूले में झूलाकर भक्तों को दर्शन का लाभ दिया गया था।

ता. ६-८-०८ से ता. १०-८-०८ तक शा. धर्मवल्लभदासजी तथा संत मंडलने रात्रि के ज्ञान सत्र में स.गु. गोपालानंद स्वामी की बातों को सुनकर भक्तों को सन्तुष्ट किया था। श्रावण कृष्ण-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। ठाकुरजी के सिंहासन को खूब अच्छी तरह सजाकर झुलाया गया था।

बाल-बालिका मंडल द्वारा धार्मिक विषयों पर छोटे-छोटे नाटक खेले गये थे। रात्रि १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती का दर्शन करने के लिये पूरा मंदिर भरगया था।

मंदिर के ट्रस्टी श्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल यदा-कदा उपस्थित होकर प्रेरणा देते रहते हैं। इसके बाद कोठारीश्री अमृतभाई पटेल, श्री प्रशांतभाई व्यास तथा रसिकभाई पटेल इत्यादि हरिभक्तां की सेवा सराहनीय हैं।

- प्रवीणभाई उपाध्याय

माणसा मंदिर के संतो द्वारा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से एवं संत मंडल, पूर्णप्रकाश स्वामी, चन्द्रप्रकाश स्वामी इत्यादि संतोने झूले को नानाविधसजाकर झूले पर भगवान को झुलाया था। प्रातः श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा, सायंकाल स.गु. निष्कुळानंद स्वामी रचित धीरजाख्यान कथा, समूह महापूजा कराकर जन्माष्टमी का उत्सव मनाया गया था।

श्रावण मास में मुबारकपुर, माणेकपुर, गोझारिया समी, बापुपुरा, इन्द्रपुरा, कृष्णसिंहनो माढ (माणसा) इत्यादि गाँव मे सत्संग सभा का आयोजन करके श्रीहरिका माहात्म्य धर्मकुल का माहात्म्य समझाया गया था। सभी हरिभक्तों को सत्संग के परंपरानुसार प्रतिदिन मंदिर में आने का नियम दिया गया था। *- शा. भक्तिकेशवदास*

एप्रोच (बापूनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्रावण मास में झूले पर अलंकृत महाप्रभु को झुलाया गया था। तथा महापूजा का आयोजन हुआ था।

श्रावण शुक्ल-१० के दिन करीब १५० जितने भक्त महापूजा में भाग लिये थे। जन्माष्टमी की रात्रि में कीर्तन भजन, श्री नरनारायण युवक मंडल द्वारा रास गर्बा का आयोजन किया गया था। रात्रि १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। जिस में हजारों की संख्या में भक्त उपस्थित थे। इस प्रसंग पर श्री रसिकभाई काछडिया तथा श्री गोकुलभाई सुहागिया यजमान पद को प्राप्त करके प्रेरणास्थ बने थे। श्री घनश्याम महाराज का तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के पोषाक का दर्शन करके भक्तलोग भाव विभोरहो गये थे।

- गोरधनभाई सीतापरा

वणझर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से स्वयंप्रकाश इत्यादि संत मंडलने यहाँ के मंदिरमें जन्माष्टमी का श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। हरिभक्तों को श्रीहरिकी महिमा समझाकर सुंदरलाभ दिया था।

- रमणलाल पटेल

नवा वाडज मंदिर

चातुर्मास में ता. ३१-८-०८ रविवार को प्रातः ७-३० बजे से १२-०० शास्त्रोक्त विधिसे श्री घनश्याम महाराज के सांनिध्य में महापूजा का आयोजन प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से किया गया था। कालुपुर मंदिर से को.स्वा. रामानुजदासजी तथा शा. धर्मकिशोरदासजी इस प्रसंग पर पधारे थे। महापूजा कराने वाले तथा करने वाले दोनो को अलौकिक धार्मिक महत्व संतोने समझाया था। *- मनजीभाई पटेल*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव मनाया गया

अमेरिका के कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में २६ जुलाई शनिवार के दिन अपने भावि आचार्य पूज्य लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस शुभ प्रसंग पर मुख्य प्रवेश द्वार, ठाकुरजी का सिंहासन तथा मंदिर को अलंकृत किया गया था। सुंदर रोशनी से मंदिर को देदीप्यमान किया गया था। सुन्दर आसन को सजाकर प.पू. लालजी महाराजश्री की तस्वीर दर्शनार्थ रखी गयी थी। जो रंगबिरंगी फूलों से सजाई गई थी। सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गई थी। इसके बाद युवक मंडल तथा बडे हरिभक्तों ने नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गया था।

इसके बाद महंत स्वामी कथा के प्रारंभ में सभी लोगों को उत्सव प्रसंग में अवश्य उपस्थित रहाकरें तथा सहयोगी बने ऐसी सूचना दिये थे। आज अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराज का प्रागट्योत्सव है। धर्मकुल के भगवान रहे हैं। इसलिये धर्मकुल की सेवा अवश्य करनी चाहिए। अपने लालजी महाराजश्री अभी बहुत छोटे है, फिर भी देश-विदेश में भावि पीढी का आत्म कल्याण के लिये विचरण करते हैं। गत वर्ष कांकरोली (राजस्थान) मंदिर में पधारे उस समय श्रीनाथजी भगवान के हाथ का फूल मांगे लेकिन पुष्टि मार्ग की मर्यादा होने के कारण फूलमाला नहीं दी जासकती, फिर भी प.पू. लालजी महाराज का आग्रह चालू ही रहा। लेकिन एकाएक भगवान के हस्त कमल में से फूल नीचे गिर गया, तथा लालजी महाराज पुनः फूल मांगे, फिर भी पुजारी नहीं दिया, उसी समय भगवान के कंठ का हार नीचे गिरा, वहाँ उस समय उपस्थित हजारों हरिभक्त तथा पुजारी ने यह दृश्य देखा। सभी यह दृश्य देखकर आश्चर्य चकित रह गये। पुजारी को यह हो गया कि इसमें हमारा अब कुछ चलेगा नही, इसलिय वे सभी पुजारियों ने यह समझ लिया कि ये भगवान के वंशज हैं इस कारण सामने से पुष्प लाकर दिया और आशीर्वाद प्राप्त किया।

बहुत छोटे थे तब से गाँव में तथा अन्य सभा में आशीर्वाद देने पधारते रहे हैं। इस प्रकार महंत स्वामी धर्मकुल की महिमा का गुणगान किये। बाद में सभी भक्तजन लालजी महाराज के चित्र प्रतिमा की आरती करके धन्यता का अनुभव किये। इस प्रसंग पर यजमान परिवार तथा अन्य लोग प्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे।

- प्रवीणभाई शाह

वोशिंग्टन डी.सी. में (I.S.S.O. चेप्टर) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे

२४ अगस्त रविवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन सायंकाल ४ बजे से ८ बजे तक सर्वना पार्क काम्युनीटी सेन्टर के होल में सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिसमें वचनामृत २७३ का पाठ किया गया था। साथ में भजन-कीर्तन का भी आयोजन किया गया था। इस के बाद १ घंटे तक वोंशन अपने मंदिर से सिध्धेश्वर स्वामी की (माईक सेल्य फोन द्वारा) कथा सुनाई गई थी। इसके बाद आई.एस.एस.ओ. का समाचार सुनाया गया था। १ सितम्बर सोमवार को श्री शिव विष्णु टेम्पल के होल में अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में सायंकाल ४ से ८ तक सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। अपने चेरीहील मंदिर से सायंकाल ५-२० बजे संत-पार्षद मंडल तथा हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ प.पू. महाराजश्री पधारे, उस समय उपस्थित हजारो भक्त प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का स्वागत किये थे। ठाकुरजीकी आरती उतारकर सभी को दर्शन का लाभ दिये थे। न्युवर्ग टाउन में एक हरिभक्त के यहाँ सत्संग सभा रखी गयी थी। वहाँ शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा. माधव स्वामी भगवान की तथा धर्मकुल की महिमा को उत्तम ढंग से समझाया था। बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद देते हुए सत्संग की वृद्धि के लिये प्रवचन करके प्रोत्साहित किये ते। भावि पीढी के सुख के लिये भजन भक्ति करने का अनुरोधकिया था। इसके बाद ठाकुरजीकी थाल आरती करके प.पू. आचार्य महाराजश्री भी संत मंडल के साथ दूसरे हरिभक्तों के घर पधारे थे। दूसरे दिन ९ से १ बजे तक ६ हरिभक्तों के घर प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। सायंकाल ४ बजे श्री शिवविष्णु टेम्पल में सत्संग सभा हुई थी। जिसमें शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा शा. माधव स्वामी, शा. व्रजवल्लभदासने भाववाही वाणी में कथा प्रवचन किया। प.पू. महाराजश्रीने सभा में पधारते ही हरिभक्त आनंदित हो गये थे। श्री नरनारायणदेव, श्री स्वामिनारायण भगवान तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के जयनाद के साथ पधारेहुए संत-पार्षद का पुष्पहार से स्वागत किया गया था। राग-द्वेष तथा ईर्ष्या रहित सच्चा सत्संग करके जीवन का श्रेय सिद्ध करने की आज्ञा किये थे। सायंकाल ७ बजे प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भगवान की आरती उतारे थे। उस सभी

हरिभक्तों ने शिष्टता के साथ प.पू. आचार्य महाराजश्री का चरण स्पर्श किया था।

अंत में सभी लोग ठाकुरजी की आरती का दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किये थे । वरजीनिया स्टेट तथा मेरीलेन्ड में क्रमशः महीने में दो बार सभा का आयोजन किया जाता है। यहाँ की सत्संग प्रवृति में सभी हरिभक्त खूब भाग लेते है। इसके अलांवा नये भक्त भी हुए है। यह जानकर प.पू. महाराजश्री खूब प्रसन्न हुए थे। इसके बाद जेब इष्ट कोस्ट अमेरिका पधारेंगे तब वोशिंग्टन डी.सी. अवश्य पधारेंगे । इस तरह सभी को आशीर्वाद देकर प्रसन्नता व्यक्त किये थे। यहाँ धर्मकुल की खुब कृपा है। इसका परिणाम यह कि सत्संग की वृद्धि उत्तरोत्तर हो रहीहै। *- कनुभाई पटेल*

स्ट्रेधाम (U.K., I.S.S.O. चेप्टर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में १३ वां पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से स्ट्रेधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी के १३ वें पाटोत्सव प्रसंग पर स.गु. वासुदेवानंद वर्णीकृत भक्ति शास्त्र श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण ता. २५-८-०८ से ३१-८-०८ तक शा.स्वा. घनश्यामदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर पोथीयात्रा धूमधाम से निकली थी। कथा के अंत में शा. केशवचरणदासने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की महिमा समझाई थी। गेटवीक तथा चेप्टर मंदिर से संत पधारे थे। श्रीहरिकृष्ण महाराज का पंचामृत अभिषेक किया गया था। हरिभक्त खूब बडी संख्या में उपस्थित थे । कथा के यजमान पुरुषोत्तमभाई नाथाभाई पटेल परिवार था। ता. ३१-८-०८ रविवार दोपहर १२-०० बजे कथा की पूर्णाहुति की गयी थी । महाप्रसाद में भी यजमान बनकर भक्तलोग लाभ लिये थे।

ता. १४-८-०८ के दिन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की रात्रि में धुन कीर्तन करके १२-०० बजे श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की आरती की गयी थी। इसके बाद हरिभक्तों ने रासोत्सव किया था। *- जयेशभाई वाघेला*

क्रोली गेटवीक (I.S.S.O., U.K.) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के क्रोली गेटवीक श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अविरत चल रही है। मंदिर में द्वितीय पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । पाटोत्सव के प्रसंग पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पारायण के वक्ता सा. सूर्यप्रकाशदासजी थे । पारायण के यजमान श्री बाबुभाई पानाचंदभाई लींबाचिया अ.नि. ज्योतिबहन बाबूभाई लींबाचिया तथा पुंजीरामभाई लींबाचिया के स्मरणार्थ उन्ही के परिवार वाले श्री जीतुभाई, शंकुतलाबहन इत्यादि लाभ लिये थे।

अन्नकूट के यजमान श्री विजयभाई, जगदीशभाई, अभिषेक के यजमान श्री जीतुभाई शनाभई, श्री गणेशभाई के यजमान तथा महापूजा के यजमान पद का अन्य लोगोने लाभ लिया था। संतोने अन्नकूट की आरती उतारकर दर्शन का लाभ दिया था । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र पढा गया था । सभी हरिभक्त देवदुर्लभ लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किये थे। *- जितुभाई शनाभाई पटेल*

ब्राईटन श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.K.)

ब्राईटन के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ९वां पाटोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। इस प्रसंग पर ता. १०-८-०८ से १४-८-०८ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया था। पारायण के वक्ता स्वा. सूर्यप्रकाशदासजी थे। इस पारायण के यजमान हिरजीभाई भावजीभाई भुडिया (झेटडी) कच्छवाला थे।

ता. १४-८-०८ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव अन्नकूट, अभिषेक इत्यादि बडे धूमधाम से मनाया गया था । अन्नकूट इत्यादि की सेवा जयकृष्ण स्वामी तथा पुजारी स्वामी भगत ने की थी । श्री प्रकाशभाई विरजीभाई, दर्शन-देशाई, श्री जीतुभाई शामजी वेकरिया, श्री हरिसभाई नारणभाई राधवाणी, महाप्रसाद के यजमान थे। ठाकुरजी के अन्नकूट की सेवा बहनो ने की थी। सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद पत्र को पढा गया था। इस प्रसंग पर लंडन क्रोली, स्ट्रेधाम से हरिभक्त पधारे थे। *- प्रकाशभाई मुलजीभाई वरसामी*

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में तीसरा पाटोत्सव संपन्न

श्री नरनारायणदेव स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया न्युजर्सी में ३० अगस्त शनिवार को तीसरा पाटोत्सव धर्मकुल परिवार की आज्ञा से धूमधाम के साथ मनाया गया था।

इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया गया था। प्रथम दिन पोथी यात्रा निकाली गायी थी। कथा के वक्ता शा. स्वा. निर्गुणदासजी थे।

शनिवार की प्रातः ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक पुजारी स्वामी ने षोडशोपचार विधिसे किया ता। बाद में अन्नकूट दर्शन का लाभ सभी को मिला था । यहाँ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव तथा नंद महोत्सव धूमधाम के साथ

मनाया गया था। वहाँ की सेवा संस्था मे सेवा करने वाले डॉक्टरो को सम्मानित किया गया था।

इस प्रसंग पर "सेवा" संस्था ने मेडिकल केम्प का आयोजन करके नामचीन डॉक्टरों द्वारा विना मूल्य के रोगियों का निदान किया था। *- प्रवीणभाई शाह*

पारसीपेनी न्युजर्सी में (I.S.S.O.) के १२ वें छपैयाधाम मंदिर का भूमिपूजन

न्युजर्सी अर्थात् गुजरातियों का विस्तार, जहाँ पर अपना श्री स्वामिनारायण संप्रदाय का (आई.एस.एस.ओ.) में तीन मदिर है चौथा चालू है। जिसका भूमि पूजन ता. ९-८-०८ के दिन प.पू. बडे महाराजश्री के हाथों संपन्न हुआ था। इस प्रसंग पर अमेरिका के आई.एस.एस.ओ. चेप्टरो से हरिभक्त, लंडन तथा इन्डिया से हरिभक्त विशेषस्प से उपस्थित थे।

प.पू. बडे महाराजश्री सुंदर अलंकृत टेन्ट में पधारे थे। इसके साथ १२ वें भव्य मंदिर का भूमिपूजन शास्त्र विधिसे अपने वरद् हाथों से किये थे।

प्रासंगिक सभा में आई.एस.एस.ओ. चेप्टरों के प्रत्येक हरि भक्तों ने प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। संतो ने जब सभा मे मंदिर निर्माण हेतु अर्थ की बात की तो एक बहन अपने शरीर के सम्पूर्ण अलंकार उतारकर तुरंत भेट कर दी। इसी तरह अनेक हरिभक्त अपनी भेट को सुप्रद किये।

चेरीहील के महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा विहोकन मंदिर के व्रजवल्लभदासजीने भी मंदिर निर्माण हेतु हरिभक्तों को सुझाव दिया था। अंत में प.पू. बडे महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए बताया कि आदरणीय संत तथा हरिभक्तों से ही मंदिर की शोभा है। आज से दो वर्ष पहले इस भूमि पर जब आया था तथा आज मुझे बडा ही आनंद का अनुभव हो रहा है। पहलीबार में ही छपैया धाम का स्वप्न आया और आज साकार हो गया। चैत्र शुक्ल-९ के दिन श्रीहरि का प्रागट्य दिन तथा आज ९ अगस्त है जो आज के दिन श्रीहरि का यहाँ प्रागट्य हुआ है। यहाँ पर मूल संप्रदाय का प्रारंभ १९७८ में हुआ था। इस से पहले मंदिर विहोकन में था। उसके बाद यह १२ वां मंदिर हो रहा है। अभी तक समाचार मिला है कि वायरन में भी मंदिर के लिए जगह ले ली गयी है। जब कि केनेडा, टोरन्टो में मूर्ति प्रतिष्ठा हो रही है। इस तरह सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रसंग पर "सेवा" संस्था ने मेडिकल केम्प द्वारा नामांकित डॉ. से हरिभक्तोंका उचित निदान करवाया था।

- प्रविणभाई शाह

नडोला (झांबीया)

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की कृपा से यहाँ के हरिभक्त साप्ताहिक सत्संग सभा का आयोजन करते रहते हैं।

ता. १७ तथा २९ जुलाई २, ९, १२, १६, २३, २४, २७ अगस्त ७, ११ तथा ४ सितम्बर को श्री रमणभाई पटेल श्री प्रफुलभाई सोनी, श्री कीरटीभाई पारेख, श्री जयेशभाई पटेल, श्री ज्योतिषभाई सोनी, श्री राजेन्द्रभाई सोनी, श्री जिग्नेशभाई पटेल, श्री धर्मेश सोनी, जिगर सोनी सभा के यजमान थे। जिस में स्वामिनारायण मंत्र, धून, वचनामृत, भक्त चिंतामणी इत्यादि ग्रंथो का पठन, टाकुरजी की आरती, नित्य नियम दो घंटे तक किया गया था। प्रति एकादशी को सभा, कथा वार्ता, धुन-भजन इत्यादि का आयोजन होता है। श्रीहरि का तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का माहात्म्य समझाया गया था।

- जयेश पटेल

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

चलोडा (धोलका) : धोलका गाँव के श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान श्री जयंतीभाई डाह्याभाई पटेल (मास्टर) ता. ५-९-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है। इनके अक्षरनिवासी होने से धोलका सत्संग में बडी कमी हुई है।

रोतीशाला (मुलीदेश) : वर्तमान में मुंबई मीरा रोड श्री मनहरभाई बाबूभाई टांक ता. ८-९-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

नवावाडज : श्री भीखाभाई मूलजीभाई सोनी (धंधुकावाला) ता. १०-८-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

बालवा (उनावा) : श्री अमृतभाई मोतीजी चौधरी ता. ९-१०-०८ बुधवार के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।





१. श्री स्वामिनारायण मंदिर नवा वाडज में समूह महापूजा प्रसंग पर कोठारी रामानुज स्वामी तथा शा. धर्मकिशोरदासजी

२. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद की तरफ से प्रकाशित नूतन वर्ष का कलन्डर तथा दट्टा एव साहित्य

प्राप्ति स्थानः साहित्य केन्द्र, कालुपुर, अहमदाबाद

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08








श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद, कालुपुर में जलझीलणी एकादशी के दिन परंपरागत श्री गणपतिजी के रथोत्सव प्रसंग पर श्री गणपतिजी की आरती उतारते हुए तथा उत्सवी मंडल एवं संत हरिभक्तों के साथ दर्शन देते हुए अपने भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री

Prof. Arts (079) 26582916, 9879606686